[१] //सद्धर्म वर्ग/

१. पठमसम्मत्तनियामसुत्तं

Similar to 152, but not typed

२. दुतियसम्मत्तनियामसुत्तं

१५२.भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होताकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य प्राप्ति कर स के। कौन-सी पांच बातें? धर्म-कथा का उपहास करता है, धर्म-कथिक का उपहास करता है, अपना उपहास करता है, जड़-मूर्ख दुष्टप्रज्ञ होता है तथा न जानते हुए भी समझता हैकि मैं जानता हूं।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होताकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर स के।

भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती है वह धर्म सुनता हुआ इस योग्य होता हेकि कुशल धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य प्राप्ति कर स के। कौन-सी पांच बातें? धर्म-कथा का उपहास नहीं करता है, धर्म-कथित का उपहास नहीं करता है, अपना उपहास नहीं करता हे, जड़-मूर्ख नहीं, प्रज्ञावान होता है तथा नहीं जानने पर यह नहीं समझताकि मैं जातता हूं।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य होता हैकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य प्राप्त कर स के।

३. ततियसम्मत्तनियामसुत्तं

१५३.भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती हैं, वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होताकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर स के। कौन-सी पांच बातें? ढोंगी ढोंग-युक्तचित्त से धर्मोपदेश सनुता है,छिद्रानुवेषण करने की दृष्टि से उपालम्भ देने की इच्छा वाला धर्मोपदेश सुनता है, धर्मोपदेश के प्रति दुर्भावना युक्तचित्त से धर्मोपदेश सुनता है, जड़-मूर्ख दुष्प्रज्ञ होता है, तथा न जानते हुए भी समझता हैकि मैं जानता हूं।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती है वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होताकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर स के।

भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती है वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य होता हैकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर स के। कौन-सी पांच बातें? अम्रक्ष-युक्तचित्त से अम्रक्षी (= जो ढोंगी नहीं है) धर्मोपदेश सुनता है,छिद्रानवेषण नहीं करने की दृष्टि से उपालंभ रहित हो धर्मोपदेश सुनता है, धर्मोपदेशक के प्रति दुर्भावना रहितचित्त से धर्मोपदेश सुनता है, जड़-मूर्ख नहीं, प्रज्ञावान होता है तथा नहीं जानने पर यह नहीं समझताकि मैं जानता हूं।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति में ये पांच बातें होती हैं, वह धर्म सुनता हुआ इस योग्य होता हैकि कुशल-धर्मों के पथ पर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके।

४. पठमसद्धम्मसम्मोससुत्तं

१५४.भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म के ह्रास का सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है। कौन-सी पांच?भिक्षुओ,भिक्षु ध्यान देकर धर्म का श्रवण नहीं करते, ध्यान देकर धर्म का पाठ नहीं करते, ध्यान देकर धर्म को याद नहीं रखते, ध्यान देकर स्मृति-गत धर्मों के अर्थ परविचार नहीं करते और न ध्यान देकर उन धर्मों तथा उनके अर्थों को जानकर तदनुसार जीवन ही व्यतीत करते हैं।भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती हैं। कौन-सी पांच?भिक्षुओ,भिक्षु ध्यान देकर धर्म का श्रवण करते हैं, ध्यान देकर धर्म का पाठ करते हैं, ध्यान देकर धर्म को याद रखते हैं, ध्यान देकर स्मृति-गत धर्मों के अर्थ परविचार करते हैं तथा ध्यान देकर उन धर्मों तथा उनके अर्थों को जानकर तदनुसार जीवन व्यतीत करते हैं।भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

५. दुतियसद्धम्मसम्मोससुत्तं

१५५.भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म के ह्रासका, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती हैं। कौन-सी पांच?भिक्षुओ,भिक्षु धर्म का-सुत्त, गेय्य वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म, वैपुल्य (वेदल्‍ल) का– पाठ नहीं करते हैं।भिक्षुओ, यह पहली बात है, जो सद्धर्म के ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरहविस्तार से दूसरों को उस धर्म की देशना नहीं करते।भिक्षुओ, यह दूसरी बात है, जो सद्धर्म के ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरहविस्तार से दूसरों को वह धर्म बँचवाते नहीं हैं।भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरह से वेविस्तार से उसका सम्मिलित-पाठ [= सज्झायन] नहीं करते हैं।भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्म के -ह्रासका, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरह से वे उस धर्म काचित्त सेविचार नहीं करते हैं, मनन नहीं करते हैं, मन से उसका परीक्षण नहीं करते हैं।भिक्षुओ, यह पांचवी बात है जो सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती हे।भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म के ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रासन होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है। कौन-सी पांच?भिक्षुओ,भिक्षु धर्म का– हुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म, वैथूल्य [= वेदल्‍ल] का– पाठ करते हैं।भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्दान न होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ, जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरह से दूसरों को उस धर्म की देशना करते हैं।भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरहविस्तार से दूसरों को वह धर्म बँचवाते हैं।भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो सद्धर्म के ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरह से वेविस्तार से उसका सम्मिलित पाठ [= सज्झायन] करते हैं।भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठकिया है, उसी तरह से वे उस धर्म काचित्त सेविचार करते हैं, मनन करते हैं, मन से उसका परीक्षण करते हैं।भिक्षुओ, यह पांचवी बात है, जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने तथा सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती हैं।

६. ततियसद्धम्मसम्मोससुत्तं

१५६.भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती हैं। कौन-सी पांच बातें?भिक्षुओ,भिक्षु ऐसे दुर्ग्रृहीत सूत्रों का पाठ करते हैंजिनके पद-व्यंजन यथायोग्य नहीं होते।भिक्षुओ,जिनके पद-व्यजन यथायोग्य नहीं होते, उन सुत्रों का अर्थ भी यथायोग्य नहीं होता।भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

भिक्षुओ,भिक्षु, दुमुर्ख होते हैं, दुर्वचनों से युक्त, असहनशील, अनुशासन को अंगीकार करने में अकुशल।भिक्षुओ, यह दूसरी बात है।

फिरभिक्षुओ, जोभिक्षु बहु-श्रुत होते हैं, आगम-धर होते हैं, धर्म-धर होते हैं,विनय-धर होते हैं, मातृका-घर <$Fअभिधर्म के शीर्षकों को धारण करने वाले।+ होते हैं, वे दूसरों को अच्छी तरह सूत्र नहीं बँचवाते। उनके मरने पर सुत्तंत की जड़ कट जाती है, उसकेलिये कहीं शरण-स्थल नहीं रहता।भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ, स्थविरभिक्षु जोडू-बटोरू हो जाते हैं,शिथिल हो जाते हैं, पतन की ओर पूर्वगामी, एकांतचिंतन केविषय में जुआ उतार कर रख देने वाले, अप्राप्त की प्राप्ति केलिये वीर्य नहीं करने वाले, तथा प्रयत्न नहीं करने वाले अनधिकृत को अधिकृत करने केलिये, असाक्षातकृत को साक्षात करने केलिये। उनके पीछे आने वाली जनता भी उन का अनुकरण करती है। वह भी जोडु-बटोरू हो जाती है,शिथिल हो जाती है, पतन की ओर पूर्व-गामी, एकांत-चिन्तन केविषय में जुआ उतार कर रख देने वाली, अप्राप्त की प्राप्ति केलिये वीर्य नहीं करने वाली तथा प्रयत्न नहीं करने वाली अनधिकृत को अधिकृत करने केलिये, असाक्षातकृत को साक्षात करने केलिये।भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ, संघ में फूट पड़ जाती है,भिक्षुओ, संघ में फूट पड़ जाने पर परस्पर गाली दी जाती है, परस्पर भला-बुरा कहा जाता है, परस्पर झगड़े होते हैं, परस्पर एक दूसरे को त्यागते हैं। ऐसा होने पर संघ के प्रति जो अश्रद्धावान होते हैं, वे श्रद्धावान नहीं बनते; जो श्रद्धावान होते हैं, उन में से कुछ अश्रद्धावान हो जाते हैं।भिक्षुओ, यह पांचवीं बात है जो सद्धर्म के –ह्रास का, सद्धर्म के अंतर्धान का कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पांच बातें सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती हैं। कौन-सी पांच बातें?भिक्षुओ,भिक्षु ऐसे सुगृहीत सुत्रों का पाठ करते हैंजिनके पद-व्यंजन यथायोग्य होते हैं, उन सुत्रों का अर्थ भी यथायोग्य होता है।भिक्षुओ,जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य होते हैं, उन सुत्रों के अर्थ भी यथायोग्य होते हैं।भिक्षुओ, यह पहली बात है, जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ,भिक्षु सुवच होते हैं, सुवचनों से युक्त, सहनशील, अनुशासन को अंगीकार करने में कुशल।भिक्षुओ, यह दुसरी बात है जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

भिक्षुओ, जोभिक्षु बहुत-श्रुत होते हैं, आगम-धर होते हैं, धर्म-धर होते हैं,विनय-धर होते हैं, मातृका-धर होते हैं, वे दूसरों को अच्छी तरह सूत्र बँचवाते हैं। उनके मरने पर सुत्तंत का मूलोच्छेद नहीं होता, उसकेलिये प्रतिष्‍ठा बनी रहती है।भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ, स्थविरभिक्षु, जोड-बटोरु नहीं होते,शिथिल नहीं होते, पतन की ओर पूर्व-गामी नहीं होते, एकांत-चिंतन केविषय में जुआ उतार कर रख देने वाले नहीं होते। अप्राप्त की प्राप्ति केलिये, अनधिकृत पर अधिकार करने केलिये असाक्षातकृत को साक्षात करने केलिये वीर्य करते हैं।भिक्षुओ, यह चौथी बात है, जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है।

फिरभिक्षुओ, संघ में फूट नहीं पड़ जाती है, वह समग्र-भाव से एक होकर अविवाद-रहित हो, एक ही उद्देश्य को लेकर सुखपूर्वकविहार करता है।भिक्षुओ, संघ के एकत्र रहने पर, परस्पर गाली नहीं दी जाती, परस्पर भला-बुरा नहीं कहा जाता, परस्पर झगड़े नहीं होते, परस्पर एक दूसरे को नहीं त्यागते। ऐसा होने पर जो अश्रद्धावान होते हैं, वे श्रद्धावान हो जाते हैं; जो श्रद्धावान होते हैं, वे अधिक श्रद्धावान हो जाते हैं।भिक्षुओ, यह पांचवी बात हैं, जो सद्धर्म कीस्थिति, सद्धर्म का -ह्रास न होने, सद्धर्म का अंतर्धान न होने का कारण होती है। इमे खो,

७. दुक्‍कथासुत्तं

१५७.भिक्षुओ, आदमी आदमी को लेकर, इन पांच आदमियों के प्रति बोली गई वाणी अप्रिय-वाणी होती हे।किन पांच आदमियों के प्रति?भिक्षुओ, अश्रद्धावान केलिये श्रद्धा संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। दुश्शील केलिये सदाचार संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। अल्प-श्रुत केलिये बहुश्रुत-पन की बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। कंजूस केलिये त्याग संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। मूर्ख केलिये प्रज्ञा संबंधी बातचीत अप्रिय वाणी होती है।

भिक्षुओ, अश्रद्धावान केलिये श्रद्धा संबंधी बातचीत अप्रिय वाणी क्यों होती हैं?भिक्षुओ, जो अश्रद्धावान होता है वह श्रद्धा की बात कही जाने पर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है,विरोध करता है, कोप, द्वेष तथा असंतोष प्रकट करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस श्रद्धा-संपत्ति को नहीं देखता, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये अश्रद्धावान केलिये श्रद्धा संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, दुश्शील केलिये सदाचार संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, वह सदाचार की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है,विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असंतोष प्रकट करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस सदाचार-संपत्ति को नहीं देखता। उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये दुश्शील केलिये सदाचार संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, अल्प-श्रुत केलिये बहुश्रुत-पन संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो अल्प-श्रुत होता है वह बहु-श्रुत-पन की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है,विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असंतोष प्रकट करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस बहुश्रुत-पन की संपत्ति को नहीं देखता, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये अल्प-श्रुत केलिये बहु-श्रुत-पत संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, कंजूस केलिये त्याग संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो कंजूस होता है, वह त्याग की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है,विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असंतोष प्रकट करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस त्याग-संपत्ति को नहीं देखता, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये कंजूस केलिये त्याग संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, मूर्ख केलिये प्रज्ञा संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है, वह प्रज्ञा की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है,विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असन्तोस प्रकट करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस प्रज्ञा-संपत्ति को नहीं देखता, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये मूर्ख केलिये प्रज्ञा संबंधी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है।भिक्षुओ, आदमी आदमी को लेकर इन पांच आदमियो के प्रति बोली गई वाणी अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, आदमी वादमी को लेकर इन पांच आदमियों के प्रति बोली गई वाणीप्रिय-वाणी होती है।किन पांच आदमियों के प्रति?भिक्षुओ, श्रद्धावान केलिये श्रद्धा संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है। शीलवान केलिये सदाचार संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है। बहुश्रुत केलिये बहुश्रुत-पन संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है। त्यागी केलिये त्याग संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है। प्रज्ञावान केलिये प्रजा संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, श्रद्धावान केलिये श्रद्धा संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो श्रद्धिवान होता है, वह श्रद्धा की बातचीत कहीं जाने पर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है,विरोध नहीं करता है, कोप, द्वेष, तथा असंतोष प्रकट नहीं करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस श्रद्धा संपत्ति को देखता है, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये श्रद्धावान केलिये श्रद्धा-संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, शीलवान केलिये सदाचार संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो शीलवान होता है, वह सदाचार की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है,विरोध नहीं करता है, कोप, द्वेष, तथा असंतोष प्रकट नहीं करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस सदाचार संपत्ति को देखता है, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये शीलवान केलिये सदाचार संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, बहुश्रुत केलिये बहुश्रुतपन संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो बहुश्रुत होता है, वह बहुश्रुत-पन की बातचीत कहीं जाने पर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है,विरोध नहीं करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस बहु-श्रुत-संपदा को देखता है, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये बहुश्रुत केलिये बहुश्रुत-पन संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, त्यागी केलिये त्याग संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो त्यागी होता है, वह त्याग की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध नहीं हो होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है,विरोध नहीं करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस त्याग-संपदा को देखता है, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये त्यागी केलिये त्याग संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, प्रज्ञावान केलिये प्रज्ञा संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी क्यों होती है?भिक्षुओ, जो प्रज्ञावान होता है, वह प्रज्ञा की बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है,विरोध नहीं करता है। यहकिसलिये?भिक्षुओ, वह अपने में उस प्रज्ञा संपदा को देखता है, उस बातचीत से उसके मन में प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये प्रज्ञावान केलिये प्रज्ञा संबंधी बातचीतप्रिय-वाणी होती है।भिक्षुओ, आदमी आदमी को लेकर इन पांच आदमियों के प्रति बोली गई वाणीप्रियवाणी होती हैं।

८. सारज्‍जसुत्तं

१५८.भिबुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें होती हैं वह आसक्ति में आसक्त हो जाता है। कौनसी पांच बातें?भिक्षुओ,भिक्षु अश्रद्धावान होता है, दुश्शील होता है, अल्प-श्रुत होता है, आलसी होता है, तथा मूर्ख [दुष्प्रज्ञ] होता है।भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें होती हैं, वह आसक्ति में आसक्त हो जाता है।

भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बात होती हैं वहविशारद होता है। कौनसी पांच बातें?भिक्षुओ,भिक्षु श्रद्धावान होता है, सदाचारी होता है, बहुश्रुत होता है, अप्रमादी होता है, तथा प्रजावान होता है।भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें होती है, वहविशारद होता है।

९. उदायीसुत्तं

१५९. एक समय भगवान कोसम्बी के घोषिताराम मेंविहार करते थे। उस समय आयुष्मान उदायी बहुत से गृहस्थों सेघिरे हुए उन्हें बैठे धर्मोपदेश दे रहे थे। आयुष्मान आनन्दने देखाकि आयुष्मान उदायी बहुत से गृहस्थों सेघिरे हुए, उन्हें बैठे धर्मोपदेश दे रहे थे। देखकर आयुष्मान आनन्द जहां भगवान थे वहां पहुंचे। जाकर भगवान को प्रणामकर एक ओर बैठे। एक ओर बैठ आयुष्मान आनन्दने भगवान सेनिवेदनकिया– भन्ते! आयुष्मान उदायी बहुत से गृहस्थों सेघिरे हुए उन्हें बैठे धर्मोपदेश दे रहे हैं।

[भगवान बोले]– आनन्द! दूसरों को धर्मोपदेश देना आसान नहीं। आनन्द!जिसे दूसरों को धर्मोपदेश देना हो उसे स्वयं पांच बातों में प्रतिष्‍ठित होकर दूसरों को धर्मोपदेश देना चाहिये। कौनसी पांच बातें? उसेनिश्चय करना चाहियेकि मैं दान-कथा.....शील-कथा आदि के क्रम से ही दूसरों को धर्मोपदेश दूंगा। उसेनिश्चय करना चाहियेकि मैं प्रत्येक कथन का कारण प्रकट करते हुए दूसरों को धर्मोपदेश दूंगा। उसेनिश्चय करना चाहियेकि मैं सभी प्राणियो के प्रति करुणा से प्रेरित होकर ही दूसरों को धर्मोपदेश दूंगा। उसेनिश्चय करना चाहियेकि मैंबिना चीवर आदिकिसी भी वस्तु के लोभ के दूसरों को धर्मोपदेश दूंगा। उसेनिश्चय करना चाहियेकि मैंबिना अपने या दूसरों को आघात पहुंचाये दूसरों को धर्मोपदेश दूंगा। आनन्द! दूसरों को धर्मोपदेश देना आसान नहीं। आनन्द!जिसे दूसरों को धर्मोपदेश देना हो उसे स्वयं पांच बातों में प्रतिष्‍ठित होना चाहिये।

१०. दुप्पटिविनोदयसुत्तं

१६०.भिक्षुओ, ये पांच प्रवृत्तियां उत्पन्‍न होने पर इन्हें रोकना बहुत कठिन हो जाता है। कौन-सी पांच? उत्पन्‍न हुए राग का रोकना बहुत कठिन होता है। उत्पन्‍न हुए क्रोध का शमन बहुत कठिन होता है। उत्पन्‍न हुए मोह का मूलोच्छेद बहुत कठिन होता है। उत्पन्‍न सूझ [प्रतिभा] को दबाना बहुत कठिन होता है। उत्पन्‍न गमनचित्त [कहीं जाने का संकल्प] को बदलना बहुत कठिन हो जाता है।भिक्षुओ, ये पांच [प्रवृत्तियां] ऐसी हैं,जिनके उत्पन्‍न होने पर उन्हें रोकना कठिन हो जाता है।

[२] //आघात वर्ग/

१. पठमआघातपटिविनयसुत्तं

१६१.भिक्षुओ, ये पांचविरोधी-भाव के उपशमन हैं।भिक्षु को चाहियेकि वह इन पांचोंविरोधी-भावों के उत्पन्‍न होने पर उनका सर्वथा उपशमन करे। कौन-से पांच?भिक्षुओ,जिस व्यक्ति के प्रति मन मेंविरोधी भाव पैदा हो, उस व्यक्ति के प्रति मैत्री-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रतिविरोधी-भाव का उपशमन करना चाहिये।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति के प्रति मन मेंविरोधी-भाव पैदा हो उस व्यक्ति के प्रति करुणा-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रतिविरोधी-भाव का उपशमन करना चाहिये।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति के प्रति मन मेंविरोधी-भाव पैदा हो उस व्यक्ति के प्रति उपेक्षा-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रतिविरोधी भाव का उपशमन करना चाहिये।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति के प्रति मन मेंविरोधी-भाव पैदा हो, उस व्यक्ति की ओर से मन को हटा देना चाहिये, ध्यान को हटा लेना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रतिविरोधी-भाव का उपशमन करना चाहिये।भिक्षुओ,जिस व्यक्ति के प्रति मन मेंविरोधी-भाव पैदा हो, उस व्यक्ति के प्रति कर्म-भाव को मन में प्रतिष्‍ठित करना चाहिये। उसे मन में कहना चाहियेकि आयुष्मान आप कर्म-अधिकृत हैं, कर्म-दायाद हैं, या कर्म ही आप का बंधु है, कर्म ही आप का शरण-स्थल है, आप जो भी भला या बुरा काम करेंगे उसकीजिम्मेदारी आप पर होगी। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रतिविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये।भिक्षुओ, ये पांचविरोधी-भाव के उपशमन हैं।भिक्षु को चाहियेकि वह इन पांचोंविरोधी-भावों के उत्पन्‍न होने पर उनका सर्वथा उपशमन करे।

२. दुतियआघातपटिविनयसुत्तं

१६२. तब आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया– “आयुष्मानोभिक्षुओ।” उनभिक्षुओं ने आयुष्मान सारिपुत्र को प्रति-वचनदिया– “आयुष्मान!” आयुष्मान सारिपुत्र ने यह कहा–

आयुष्मानो! ये पांचविरोधी-भाव के उपशमन हैं।भिक्षु को चाहियेकि वह इन पांचोंविरोधी-भावों के उत्पन्‍न होने पर उनका सर्वथा उपशमन करे। कौन-से पांच? आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता हैजिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं। किंतु वाणी के कर्म शुद्ध होते हैं। आयुष्मानो! एसे व्यक्ति के प्रति भी उत्पन्‍न हुएविरोधी भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता हैजिसके वाणी के कर्म अशुद्ध होते हैं, किंतु शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्ति के प्रति भी उत्पन्‍न हुएविरोधी भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता हैजिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं तथा वाणी के कर्म भी अशुद्ध होते हैं, किंतु बीचबीच में थोड़े-थोड़े समय केलिये वह शुद्ध [सावकाश] रहता है और प्रीति-युक्त रहता है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्ति के प्रति भी उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मान! एक आदमी ऐसा होता हैजिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणी के कर्म भी अशुद्ध होते हैं, और बीचबीच में थोड़े समय केलिये भी न वह शुद्ध रहता है और न प्रीतियुक्त रहता है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्ति के प्रति भी उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता हैजिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, और बीचबीच में उसेचित्त का अवकाश और प्रीति भी प्राप्त रहती है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्ति के प्रति भी उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता हैकिजिसके शारीरिक-कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणी के कर्म शुद्ध होते हैं, ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोध-भाव का शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मानो! जैसे कोईभिक्षु हो, जो मात्र चीथड़ों से बने वस्त्र ही पहनता हो और उसे गली में पड़ा हुआ चीथड़ामिल जाय और वह बायें पांव से उसे दबाकर, दाहिने पांव से उसे फैलाकर, उस चीथड़े में से जो सारवान [= मजबूत]हिस्सा हो उसे फाड़कर और लेकर चला जाय। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो ऐसा आदमी होता हैकिजिसके शारीरिक कर्म-अशुद्ध होते हैं, किंतु वाणी के कर्म शुद्ध होते हैं, उस समय ऐसे व्यक्ति के अशुद्ध शारीरिक कर्मों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। किंतु स समय उसकी जो वाणी की परिशुद्धि रहती है, उसीकी ओर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता हैकिजिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, किंतु वाणी के कर्म अशुद्ध होते हैं, ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मावान जैसे कोई तालाब हो वह शैवाल तथा पानी की पपड़ी से ढका हो। वहां एक आदमी आये जो गरमी से तपा हो, गरमी से घबराया हो, थका हो तृषा लगी हो, प्यासा हो। वह उस तालाब में उतर कर, दोनों हाथों से इतिचिति [?] और शैवाल तथा पानी की पपड़ी को हटाकर, अञ्‍जलि में पानी भरकरपिये। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो यह आदमी ऐसा होकिजिसके वाणी के कर्म अशुद्ध हों, किंतु शरीर के कर्म शुद्ध हों, उस समय उस व्यक्ति के वाणी के अशुद्ध कर्मों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। उस समय उस व्यक्ति के शरीर के शुद्ध कर्मों की ओर ही ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता हैकि जस के शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है, वाणी के कर्म अशुद्ध होते हैं, किंतु बीच बीच में थोड़े थोड़े समय केलिये वह शुद्ध [= सावकाश] रहता है और प्रीतियुक्त रहता है। एसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मानो! जैसे गोपद [?] में सीमित पानी हो। वहां एक आदमी आये जो गरमी से तपा हो, गरमी से घबराया हो, थका हो, तृषा लगी हो, प्यासा हो। उसके मन में हो गोपद का यह पानी थोड़ासा है, यदि मै अञ्‍जलि से पानी पीऊँगा अथवा बरतन सेहिला दूंगा तो में इस पानी को क्षुब्धकर दूंगा और यह पीने के योग्य नहीं रहेगा। अच्छा होगाकि मैं दोनों घुटनों तथा दोनों हाथों के बल झुककर गौ-बैल की तरह पानी पीकर चल दूं। वह घुटनों और हाथों के बल झुककर, गौ-बैल की तरह पानी पीकर चल दे। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो यह आदमी ऐसा होकिजिसके शारीरिक-कर्म अशुद्ध हों, वाणी के कर्म अशुद्ध हों, किंतु बीच बीच में थोड़ी थोड़े समय केलिय वह शुद्ध [-सावकाश] रहता है और प्रीति-युक्त रहता है। उसके जो अशुद्ध शारीरिक-कर्म हों उनकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये तथा जो अशुद्ध वाणी के कर्म हों उनकी ओर भी ध्यान नहीं देना चाहिये। उस आदमी को बीच बीचमें, थोड़े थोड़े समय केलिये जो अवकाश रहता है, जो प्रीति प्राप्त रहती है, उसीकी ओर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता हैकिजिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणी के कर्म अशुद्ध होते हैं और बीच बाच में थोड़े समय केलिये भी न वह शुद्ध रहता है और न प्रीति-युक्त रहता है। ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का शमन कैसे करना चाहिये? जैसे आयुष्मानो! कोई आदमी अस्वस्थ हो, दुखी हो, अत्यंत रोगी हो और रास्ते में हो। उसके आगे का गांव भी अभी दूर हो और पीछे का गांव भी दूर छूट गया हो। उसे न खाना ही ठीकमिलता हो, न औषध ही ठीकमिलती हो, न सेवक ही ठीकमिलता हो और न उसे कोई गांव तक पहुंचा देने वालामिलता हो। उसे कोई दूसरा आदमी देखे जो स्वयं रास्ता चल रहा हो। वह उस आदमी के प्रति करुणा, दया तथा अनुकंपा से प्रेरित होकर सोचेकिकिसी तरह इस आदमी को योग्य पथ्यमिल जाये, योग्य औषधमिल जाय, योग्य सेवकमिल जाय, और कोई गांव तक पहुंचा देने वालामिल जाय। यहकिसलिये? ताकि वह रास्ते में ही कष्ट पाकर मर न जाये? इसी प्रकार आयुष्मानो! जो यह आदमी ऐसा होकि जस के शारीरिक कर्म अशुद्ध हों, वाणी के कर्म अशुद्ध हों, और बीच बीच में थोड़े समय केलिये भी न वह शुद्ध रहता हो और न प्रीति-युक्त रहता हो, ऐसे व्यक्ति के प्रति भी आयुष्मानो करूणा, दया तथा अनुकंपा ही रखनी चाहियेकि यह आयुष्मान शारीरिक दुश्चरित्रता को छोड़ शाररिक सुचरित्रता का जीवन व्यतीत करे, वाणी की दुश्चरित्रता को छोड़ वाणी की सुचरित्रता का जीवन व्यतीत करे तथा मन की दुश्चरित्रता को छोड़ मन की सुचरित्रता का जीवन व्यतीत करे। यहकिसलिये? ताकि यह आयुष्मावान शरीर के छूटने पर, मरने के अनंतर, नरक में न पड़े, दुर्गति प्राप्त न हो। इस प्रकार उस व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुएविरोधी-भाव का उपशमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता हैकिजिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, वाणी के कर्म शुद्ध होते हैं और जो बीच-बीच में शुद्ध होता है और प्रीतियुक्त रहता है। उसके प्रति उत्पन्‍नविरोधी-बाव का कैसे उपशमन करना चाहिये? जैसे आयुष्मानो! कोई पुष्करिणी हो, अच्छे जल वाली हो, स्वच्छ जल वाली, शीतल जल वाली, श्वेत जल वाली हो, सु-तीर्थ हो, रमणीय हो तथा नाना प्रकार के वृक्षों से आछन्‍न हो। वहां एक आदमी आये, जो गरमी से तपा हो, गरमी से घबराया हो, थका हो, तृषा लगी हो, प्यासा हो। वह उस पुष्करिणी में उतर, स्नान कर, जल पीकर, बाहर आकर वहीं वृक्ष की छाया में बैठ जाये वा लेट जाय।

इसी प्रकार आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होकिजिसके शारीरिक कर्म शुद्ध हों, वाणी के कर्म शुद्ध हों और जो बीच-बीच में शुद्ध होता है और प्रीतियुक्त होता है, ऐसे व्यक्ति के जो शुद्ध शारीरिक-कर्म हों उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये, जो शुद्ध वाणी के कर्म हों, उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये, जो वह बीच बीच में शुद्ध होता है और प्रीति-युक्त होता है, उसकी ओर भी ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्‍न हुईविरोधी-भावना का उपशमन करना चाहिये। आयुष्मान! जो हर तरह से प्रसन्‍न होता है, वह दूसरों की प्रसन्‍नता का कारण होता है।

भिक्षुओ, ये पांचविरोधी-भाव के उपशमन हैं।भिक्षुओं को चाहियेकि वह इन पांचोंविरोधी-भावों के उत्पन्‍न होने पर उनका सर्वथा उपशमन करे।

३. साकच्छसुत्तं

१६३. तब आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया– “आयुष्मानो,भिक्षुओ!” उनभिक्षुओं ने आयुष्मान सारिपुत्र को प्रत्युत्तरदिया– “आयुष्मान!” तब आयुष्मान सारिपुत्र ने यह कहा–

“भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें हों वह सब्रह्मचारियों द्वारा धर्म-चर्चा के योग्य है। कौन-सी पांच बातें? स्वयं शीलवान होता है और शीलसंपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का समाधान करता है। स्वयं समाधि-लाभी होता है और समाधि-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का समाधान करता है। स्वयं प्रज्ञा-संपन्‍न होता है और प्रज्ञा-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का समाधान करता है। स्वयंविमुक्ति-युक्त होता है औरविमुक्ति-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देता है। स्वयंविमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है औरविमुक्ति-ज्ञान-दर्शन के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देता है।भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें हो, वह सब्रह्मचारियों द्वारा धर्म-चर्चा के योग्य होता है।”

४. साजीवसुत्तं

१६४. तब आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया.....भिक्षुओ!जिसभिक्षु में ये पांच बातें हों, वह सब्रह्मचारियों के साथ रहने योग्य होता है। कौन-सी पांच बातें? स्वयं शीलवान होता है और शील-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का समाधान करता है। स्वयं समाधि-लाभी होता हैऔर समाधि-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का समाधान करता है। स्वयं प्रज्ञा-संपन्‍न होता है और प्रज्ञा-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का समाधान करता है। स्वयंविमुक्ति-युक्त होता है औरविमुक्ति-संपत्ति के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देता है। स्वयंविमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है औरविमुक्ति-ज्ञान-दर्शन के अनुसार ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देता है।भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें हों, वह सब्रह्मचारियों द्वारा धर्म-चर्चा के योग्य होता है।

५. पञ्हपुच्छासुत्तं

१६५. तब आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया.....आयुष्मानो! जो कोई भी दूसरों से पूछता है, वह या तो इन पांचों कारणों से अथवा इन पांचोमें सेकिसी एक कारण से। कौन-से पांच कारणों से? मन्द-बुद्धि होने के कारण, मूढ़ता होने के कारण दूसरों से प्रश्न पूछता है। इच्छा के वशीभूत होकर दूसरों से प्रश्न पूछता है, दूसरों को परास्त करने केलिये दूसरों से प्रश्न पूछता है, जानने की इच्छा से दूसरों से प्रश्न पूछता है, अथवा कुपित होकर प्रश्न पूछता है– यदि मेरे प्रश्न पूछने पर यह यथार्थ रूप से उसका समाधान कर देता है तो ठीक, यदि मेरे प्रश्न पूछने पर यह यथार्थ रूप से उसका समाधान नहीं कर देता है तो मैं ही इसका यथार्थ रूप से समाधान करूंगा। आयुष्मानो! जो कोई भी दूसरों से प्रश्न पूछता है, वह या तो इन पांचों कारणों से अथवा इन पांचो में सेकिसी एक कारण से। आयुष्मानो! मैं जो दूसरों से प्रश्न पूछता हूं, वह इसी भावना से पूछता हूं– यदि मेरे प्रश्न पूछने पर यथार्थ रूप से उसका समाधान कर देता है तो ठीक, यदि मेरे प्रश्न पूछने पर यह यथार्थ रूप से उसका समाधान नहीं कर देता है तो मैं ही इस प्रश्न का यथार्थ रूप से समाधान करूंगा।

६. निरोधसुत्तं

१६६. तब आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया– आयुष्मानो! इसकी संभावना हैकि शील-समाधि तथा प्रज्ञा से युक्तभिक्षु संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उस से नीचे उतर भी आये। इसकी भी संभावना हैकि यदि वह इसी जन्म में अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनंतर कामावचर देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये।

ऐसा कहने पर– आयुष्मान उदायीने आयुष्मान सारिपुत्र को यह कहा– आयुष्मान सारिपुत्र! इसकी कोई संभावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं हैकि वहभिक्षु इसके अनन्तर कामावचर देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो,कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकेलिये जगह नहीं है।

दूसरी बार भी..... तीसरी बार भी आयुष्मान सारिपुत्रनेभिक्षुओं को संबोधितकिया– आयुष्मानो! इसकी संभावना हैकि शील-समाधि तथा प्रज्ञा से युक्तभिक्षु संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी संभावना हैकि यदि वह इसी जन्म में अर्हत्व को प्राप्त न करे तो वह उसके अनन्तर कामावचर देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञा-वेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उत्तर भी आये।

तीसरी बार भी आयुष्मान उदायी ने आयुष्मान सारिपुत्र को यह कहा– आयुष्मान सारिपुत्र! इसकी कोई संभावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं है,कि वहभिक्षु इसके अनन्तर कामावचर देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर, संज्ञावेदयितनिरोध ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकेलिये जगह नहीं है।

तब आयुष्मान सारिपुत्र के मन में यह हुआकि तीन बार आयुष्मान उदायी ने मेराविरोधकिया, किंतु एक भीभिक्षु ने मेरा समर्थन नहींकिया। क्यों न मैं जहां भगवान है वहां चलुँ? तब आयुष्मान सारिपुत्र जहां भगवान थे, वहां गये। जाकर भगवान को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठकर आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया– आयुष्मानो। इसकी संभावना हैकि शील, समाधि तथा प्रज्ञा से युक्तभिक्षु संज्ञावेदयित-निरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सभावना हैकि यदि वह इसी जन्म में अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर-देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये।

ऐसा कहने पर आयुष्मान उदायी ने आयुष्मान सारिपुत्र को यह कहा– आयुष्मान सारिपुत्र! इसकी कोई संभावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं हैकि वहभिक्षु, इसके अनन्तर [कामावचर-देवताओं] की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित-निरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उत्तर भी आये। इसकेलिये जगह नहीं है।

दूसरी बार भी..... तीसरी बार भी आयुष्मान सारिपुत्र नेभिक्षुओं को संबोधितकिया– आयुष्मानो! इसकी संभावना हैकि शील, समाधि से तथा प्रज्ञा से युक्तभिक्षु संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी संभावना हैकि यदि वह इसी जन्म में अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये।

तीसरी बार भी आयुष्मान उदायी ने आयुष्मान सारिपुत्र को यह कहा– आयुष्मान सारिपुत्र! इसकी कोई संभावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं हैकि वहभिक्षु इसके अनन्तर कामावचर-देवतों की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारणकर संज्ञावेदयितनिरोध ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकेलिये जगह नहीं है।

तब आयुष्मान सारिपुत्र के मन में आयाकि भगवान की उपस्थिति में ही आयुष्मान उदायी ने तीन बार मेराविरोधकिया।किसी एकभिक्षु ने भी मेरा समर्थन नहींकिया। मैं चुप क्यों न रहूं? तब आयुष्मान सारिपुत्र चुप हो गये। तब भगवान ने आयुष्मान आनन्द को संबोधितकिया– उदायी! मनोमय-काय से तू क्या समझता है? “भन्ते! अरूपी संज्ञामय देवगण?” “उदायी! तुझ मूर्ख अपंडित के बोलने से क्या प्रयोजन? तुझे भी बोलना योग्य जंचता है?” तब भगवान ने आयुष्मान आनन्द को संबोधितकिया– “आनन्द! जब स्थविरभिक्षु [सारिपुत्र] को कष्टदिया जाता है, तब तुम उपेक्षा करते हो? स्थविरभिक्षु को कष्ट पाता देखकर तुम्हारे मन में करूणा भी नहीं पैदा होती?”

तब भगवान नेभिक्षुओं को संबोधितकिया–भिक्षुओ, इसकी संभावना हैकि शील, समाधि तथा प्रज्ञा से युक्तभिक्षु संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी संभावना हैकि यदि वह इसी जन्म में अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर-देवताओं की संगति में उत्पन्‍न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय औरफिर उससे नीचे उतर भी आये। भगवान ने यह कहा और यह कह कर सुगत आसन से उठकर चले गये।

तब भगवान के चले जाने के थोड़ी ही देर बाद आयुष्मान आनन्द जहां आयुष्मान उपवान थे, वहां पहुंचे। पास जाकर आयुष्मान उपवान को यह कहा– “उपवान दूसरेभिक्षु स्थविर को हैरान करते हैं। हम उनसे बात नहीं करते। लेकिन आयुष्मान उपवान इस में कुछ भी आश्चर्य नहीं हैकि भगवान आज शाम के समय ध्यानावस्था से इसी संबंध में कुछ कहें-सुनें। हो सकता हैकि भगवान का वह कथन ठीक ठीक आयुष्मान उपवान की समझ में आये। अभी हमारी संकोच-शीलता दूर हुई। तब भगवान शाम के समय ध्यानावस्था से उठ जहां सेवा-भवन [= उपस्थान-शाला] था, वहां गये। जाकरबिछे आसन पर बैठे। बैठकर भगवान ने आयुष्मान उपवान को यह कहा–

उपवान! स्थविरभिक्षु में ऐसेकितने गुण होने चाहियेजिनके होने से स्थविरभिक्षु अपने सब्रह्मचारियों [= साथियों] काप्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है? “भन्ते! स्थविरभिक्षु में ऐसे पांच गुण होने चाहियेजिनके होने से स्थविरभिक्षु अपने सब्रह्मचारियों काप्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है, तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। कौन-से पांच? भन्ते! स्थविरभिक्षु शीलवान होता है–शिक्षापदों को सम्यक-प्रकार ग्रहण करता है; बहुश्रुत होता है– [सम्यक] दृष्टि द्वारा भली प्रकार बींधा गया; कल्याणकर वचन बोलने वाला होता है, कल्याणकर वाणी से युक्त, मधुरवाणी से युक्त,विश्वस्त,निर्दोष, अर्थ को प्रकट करने वाली; इसी जन्म में सुख-देने वाले, चारों चैतसिक ध्यानों को सहज ही में, आसानी से, अनायास प्राप्त करने वाला होता है; आस्रवों का क्षय कर.....साक्षात कर प्राप्तकरविहार करता है। भन्ते!जिस स्थविरभिक्षु में ये पांच गुण होते हैं, वह स्थविरभिक्षु अपने सब्रह्मचारियों काप्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर भाजन होता है, तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है।

बहुत अच्छा, बहुत अच्छा उपवान! उपवान!जिस स्थविरभिक्षु में ये पांच गुण होते हैं, वह स्थविरभिक्षु अपने सब्रह्मचारियों काप्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। उपवान यदि ये पांच गुण स्थविरभिक्षु में न हों तो उसके सब्रह्मचारी उसका सत्कार, उसका गौरव क्यों करेंगे, उसे क्यों मानेंगे, उसे क्यों पूजेंगे? क्या टूटे दांत वाला होने के कारण? क्या सफेद बालों वाला होने के कारण? क्या चमड़ी में झुर्रियां पड़ जाने के कारण? उपमान! क्योंकि स्थविरभिक्षु में ये पांच गुणविद्यमान हैं, इसीलिये सब्रह्मचारी उसका सत्कार, उसका गौरव करते हैं, उसे मानते हैं, उसे पूजते हैं।

७. चोदनासुत्तं

१६७. तब आयुष्मान सारिपुत्रनेभिक्षुओं को संबोधितकिया..... आयुष्मानो! जोभिक्षुकिसी दूसरेभिक्षु पर दोषारोपण करना चाहता हो उसे चाहियेकि स्वयं पांच बातों पर दृढ़ रहकर दूसरेभिक्षु पर दोषारोपण करे।

कौन-सी पांच बातों पर? उचित समय देखकर दोषारोपण करूंगा, अनुचित समय पर नहीं; सच्‍चा दोषारोपण करूंगा,मिथ्या दोषारोपण नहीं; मधुर शब्दों में दोषारोपण करूंगा कठोर शब्दों में नहीं;हितचिंता से दोषारोपण करूंगा, अहित चिंता से नहीं; तथा मैत्रीचित्त से दोषारोपण करूंगा, द्वेषचित्त से नहीं। आयुष्मानो! जोभिक्षुकिसी दूसरेभिक्षु पर दोषारोपण करना चाहता हो उसे चाहियेकि स्वयं पांच बातों पर दृढ़ रहकर दूसरेभिक्षु पर दोषारोपण करे।

आयुष्मानो! मैं देखता हूंकि कोई कोई आदमी ऐसा होता हैजिसे इसलिये क्रोध आ जाता है, क्योंकि उस पर अनुचित समय पर दोषारोपणकिया गया है, उचित समय देखकर नहीं; क्योंकि उस परमिथ्या दोषारोपणकिया गया है, सच्‍चा दोषारोपण नहीं; कठोर शब्दों में दोषारोपणकिया गया है, मधुर शब्दों में नहीं; अहित चिंता से दोषारोपणकिया गया है,हित-चिंता से नहीं; तथा द्वेषचित्त से दोषारोपणकिया गया है, मैत्री-चित्त से नहीं।

आयुष्मानो!जिसभिक्षु पर यथोचितविधि से [धर्मानुसार] दोषारोपण नहींकिया गया, उसे पांच प्रकार से उसकी लज्‍जा दूर कर देनी चाहिये– आयुष्मान! तुम पर अनुचित समय पर दोषारोपण हुआ है, उचित समय पर नहीं;मिथ्या दोषारोपणकिया गया है, सच्‍चा दोषारोपण नहीं; कठोर शब्दों में दोषारोपणकिया गया है, मधुर शब्दों में नहीं; अहित चिंता से दोषारोपणकिया गया है,हित-चिंता से नहीं तथा द्वेष-चित्त से दोषारोपणकिया गया है, मैत्री-चित्त से नहीं। आयुष्मानो!जिसभिक्षु पर यथोचितविधि से दोषारोपण नहींकिया गया, पांच प्रकार से उसकी लज्‍जा दूर करनी चाहिये।

आयुष्मानो!जिसभिक्षुने यथोचित-विधि से [धर्मानुसार] दोषारोपण नहींकिया, पांच प्रकार से उसे लज्‍जित करना चाहिये– आयुष्मान! तुमने अनुचित समय पर दोषारोपणकिया है, उचित समय पर नहीं;मिथ्या दोषारोपणकिया है, सच्‍चा दोषारोपण नहीं; कठोर शब्दों में दोषारोपणकिया है, मधुर शब्दों में नहीं; अहित चिंता से दोषारोपणकिया है,हितचिंता से नहीं। आयुष्मानो!जिसभिक्षु ने यथोचितविधि से [धर्मानुसार] दोषारोपण नहींकिया, पांच प्रकार से उसे लज्‍जित करना चाहिये। यहकिसलिये? ताकि वहकिसी दूसरेभिक्षु पर भी [इसी तरह] दोषारोपण न करे।

आयुष्मानो! मैं देखता हूंकि कोई कोई आदमी ऐसा होता है,जिसे क्रोध आता है, यद्यपि उस पर समय देखकर दोषारोपणकिया गया है, अनुचित समय पर नहीं; सच्‍चा दोषारोपणकिया गया है,मिथ्या दोषारोपण नहीं; मधुर-शब्दों में दोषारोपणकिया गया है, कठोर शब्दों में नहीं;हित-चिंता से दोषारोपणकिया गया है, अहित चिंता से नहीं; मैत्रीचित्त से दोषारोपणकिया गया है, द्वेष-चित्त से नहीं।

आयुष्मानो!जिसभिक्षु पर यथोचित-विधि से [धर्मानुसार] दोषारोपणकिया हो, पांच प्रकार से उसे लज्‍जित करना चाहिये– आयुष्मान! तुम पर समय देखकर दोषारोपणकिया गया है, अनुचित समय पर नहीं; सच्‍चा दोषारोपणकिया गया है,मिथ्या दोषारोपण नहीं; मधुर शब्दों में दोषारोपणकिया गया है, कठोर शब्दों मे नहीं,हित-चिंता से दोषारोपणकिया गया है, अहित-चिंता से नहीं; मैत्री-चित्त से दोषारोपणकिया गया है, द्वेष-चित्त से नहीं। आयुष्मानो!जिसभिक्षु पर यथोचितविधि से [धर्मानुसार] दोषारोपणकिया हो, पांच प्रकार से उसे लज्‍जित करना चाहिये।

आयुष्मानो!जिसभिक्षु ने यथोचितविधि से [धर्मानुसार] दोषारोपणकिया हो, पांच प्रकार से उसकी लज्‍जा दूर करनी चाहिये– आयुष्मान! तुमने उचित समय देखकर दोषारोपणकिया है, अनुचित समय पर नहीं; सच्‍चा दोषारोपणकिया है,मिथ्या दोषारोपण नहीं; मधुर शब्दों में दोषारोपणकिया है, कठोर शब्दों में नहीं;हित चिंता से दोषारोपणकिया है, अहित चिंता से नहीं; मैत्रीचित्त से दोषारोपणकिया है, द्वेषचित्त से नहीं। आयुष्मानो!जिसभिक्षुने यथोचितविधि से [धर्मानुसार] दोषारोपणकिया हो, पांच प्रकार से उसकी लज्‍जा दूर करनी चाहिये। यहकिसलिये? ताकि वहकिसी दूसरेभिक्षु पर भी इसी तरह दोषारोपण करे।

आयुष्मानो!जिस व्यक्ति पर दोषारोपण हो उसे चाहियेकि वह दो बातों को हाथ से न जाने दे, सत्य को तथास्थिरता को। आयुष्मानो! यदि मुझ पर भी दूसरे दोषारोपण करें– भले ही वह उचित समय परकिया गया हो, भले ही अनुचित समय परकिया गया हो; भले ही सच्‍चा दोषारोपण हो वामिथ्या; भले ही मधुर शब्दों में दोषारोपण करें, भले ही कठोर शब्दोंमें; भले हीहितचिंता से दोषारोपन करें, भले ही अहित-चिंता से, भले ही मैत्री-चित्त से दोषारोपण करें, भले ही द्वेष-चित्त से– तो मैं भी इन्हीं दो बातों को हाथ से जाने न दूंगा– सत्य को तथास्थिरता को। यदि मैं जानूँगाकि कोई दोष या गुण मुझ में है तो मैं कह दूंगाकि यह बात मुझ में है, यह बात मुझ मेंविद्यमान है। यदि मैं जानूँगाकि कोई दोष या गुण मुझ में नहीं है तो मैं कह दूंगाकि यह दोष या गुण मुझ में नहीं हैं।”

“सारिपुत्र! ऐसा कहने पर भी क्या कुछ बेकार-आदमी बात नहीं समझते?”

“भन्ते! जो श्रद्धावान होते है, जीविकार्थी होते हैं, श्रद्धापूर्वक घर से बेघर हुए नहीं रहते हैं, शठ होते हैं, मायावी होते हैं, छली होते हैं, उद्धत होते हैं, अहंकारी होते हैं, चपल होते हैं, बातूनी होते हैं, कही कुछ भी बोलने वाले होते हैं, असंयमी होते हैं, भोजन केविषय में अमात्रज्ञ होते हैं, जागृत नहीं रहने वाले होते हैं, श्रमणत्व की ओर से लापरवाह होते हैं,शिक्षाओं के प्रतिविशेष गौरव का भाव नहीं रखने वाले होते हैं, जोड़ू-बटोरू होते हैं,शिथिल होते हैं, पतन की ओर अग्रसर होने वाले होते हैं, एकांत-जीवन की ओर से उदासीन होते हैं, आलसी होते हैं, प्रयत्न रहित होते हैं, मूढ़-स्मृति होते हैं,विचार-रहित होते हैं, एकाग्रता-रहित होते हैं, भ्रांतचित्त होते हैं, मूर्ख होते हैं तथा जड़ होते हैं; वे मेरे ऐसा कहने पर भी बात नहीं समझते।

किंतु भन्ते! जो कुल-पुत्र श्रद्धा-पूर्वक घर से बेघर हुए रहते हैं, जो शठ नहीं होते हैं, जो मायावी नहीं होते हैं, जो छली नहीं होते हैं, जो उद्धत नहीं होते हैं, जो अहंकारी नहीं होते हैं, जो चपल नहीं होते हैं, जो बातूनी नहीं होते हैं, जो सोच-समझकर बोलने वाले होते हैं, जो संयमी होते हैं, जो भोजन केविषय में मात्रज्ञ होते हैं, जो जागृत नहीं रहने वाले होते हैं, जो श्रमणत्व की ओर से लापरवाह नहीं होते हैं, जोशिक्षाओं के प्रतिविशेष गौरव का भाव रखने वाले होते हैं, जो जोड़ू-बटोरू नहीं होते हैं, जोशिथिल नहीं होते हैं, जो पतन की ओर अग्रसर होने वाले नहीं होते हैं, जो एकांत-जीवन की ओर से उदासीन होते हैं, जो आलसी नहीं होते, जो वीर्य-वान होते हैं, जो प्रयत्न-वान होते हैं, जो स्मृतिमान होते हैं, जोविचारवान होते हैं, जोस्थिर-चित्त होते हैं, जो एकाग्र-चित्त होते हैं, जो प्रज्ञावान होते हैं तथा जो जड़ नहीं होते हैं– वे मेरे ऐसा कहने पर बात समझ लेते हैं।”

“सारिपुत्र! जो अश्रद्धावान हों, जो जीविकार्थी हों, जो श्रद्धापूर्वक घर से बेघर हुए नहीं हों, जो शठ हों, जो मायावी हों, जो छली हों, जो उद्धत हों, जो अहंकारी हों, जो चपल हों, जो बातूनी हों, जो कहीं भी कुछ भी बोलने वाले हों, जो असंयमी हों, जो भोजन केविषय में अमात्रज्ञ हों, जो जागृत न रहने वाले हें, जो श्रमणत्व की ओर से लापरवाह हों, जोशिक्षाओं के प्रतिविशेष गौरव का भाव न रखने वाले हों, जो जोड़ू-बटोरू हों, जोशिथिल हों, जो पतन की ओर अग्रसर होने वाले हों, जो एकांत जीवन की ओर से उदासीन हों, जो आलसी हों, जो प्रयत्न-रहित हों, जो मूढ़-स्मृति हों, जोविचार-रहित हों, जो एकाग्रता-रहित हों, जो भ्रांत-चित्त हों, जो मूर्खं हों तथा जो जड़ हों– ऐसे लोगों को रहने दो।

किंतु हे सारिपुत्र! जो कुलपुत्र श्रद्धापूर्वक घर से बेघर हुए हों, जो शठ न हों, जो छली न हों, जो उद्धत न हों, जो अहंकारी न हें, जो चपल न हें, जो बातूनी न हें, जो कहीं भी कुछ भी बोलने वाले न हें, जो असंयमी न हों, जो भोजन केविषय में मात्रज्ञ हों, जो जाग्रत रहने वाले हों, जो श्रमणत्व की ओर से लापरवाह न हें, जोशिक्षाओं के प्रतिविशेष गौरव का भाव न रखने वाले हों, जो जोड़ू-बटोरू न हें, जोशिथिल न हें, जो पतन की ओर अग्रसर होने वाले न हों, जो एकांत-जीवन की ओर से उदासीन न हें, जो आलसी न हें, जो वीर्यवान हों, जो प्रयत्न-वान जो स्मृतिमान हों, जोविचारवान हों, जोस्थिरचित्त हों, जो एकाग्रचित्त हों, जो प्रज्ञावान हों तथा जो जड़ न हों– ऐसे लोगों को तुम उपदेश देना। हे सारिपुत्र! अपने सब्रह्मचारियों को उपदेश दे। हे सारिपुत्र! अपने सब्रह्मचारियों का अनुशासन कर। हे सारिपुत्र! तू संकल्प करकि मैं अपने सब्रह्मचारियों को असद्धर्म से उबारकर सद्धर्म में प्रतिष्‍ठित करूंगा। सारिपुत्र! तुझे ही यहशिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

८. सीलसुत्तं

१६८. तब आयुष्मान सारिपुत्रनेभिक्षुओं को संबोधितकिया.....भिक्षुओ, जो दुश्शील है,जिसका शील खंडित है, उसका समाधि का आधार जाता रहता है; सम्यक समाधि के न रहने पर, सम्यक समाधि खंडित होने पर यथार्थ ज्ञान-दर्शन का आधार जाता रहता है; यथार्थ ज्ञान-दर्शन के न रहने पर, यथार्थ ज्ञान-दर्शन खंडित होने परनिर्वेद-वैराग्य का आधार नहीं रहता;निर्वेद-वैराग्य के न रहने पर, नर्वेद-वैराग्य खंडित होने परविमुक्ति-ज्ञान-दर्शन का आधार नहीं रहता– जैसेभिक्षुओ,जिस पेड़ की शाखायें तथा पत्ते नहीं रहते, उसकी पपड़ी उसकी त्वचा, उसका फेग्गु [?] तथा उसका सार भी पूर्णता को प्राप्त नहीं होता। उसी प्रकार आयुष्मानो! जो दुश्शील है,जिसका शील खंडित है, उसका समाधि का आधार जाता रहता है; सम्यक समाधि के न रहने पर, सम्यक समाधि खंडित होने पर, यथार्थ ज्ञान दर्शन का आधार जाता रहता है; यथार्थ ज्ञान-दर्शन के न रहने पर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शन खंडित होने पर,निर्वेद वैराग्य का आधार नहीं रहता;निर्वेद-वैराग्य के न रहने पर,निर्वेद-वैराग्य खंडित होने परविमुक्ति ज्ञान-दर्शन का आधार जाता रहता है।

आयुष्मानो! जो शीलवान होता है,जिसका शील खंडित नहीं होता, उसका सम्यक समाधि का आधार बना रहता है; सम्यक समाधि के रहने पर, सम्यक समाधि के खंडित न होने पर यथार्थ ज्ञान-दर्शन का आधार बना रहता है; यथार्थ ज्ञान दर्शन के रहने पर, यथार्थ ज्ञान-दर्शन के खंडित न होने परनिर्वेद-वैराग्य का आधार बना रहता है;निर्वेद-वैराग्य के रहने पर,निर्वेद-वैराग्य खंडित न होने पर,विमुक्ति ज्ञान-दर्शन का आधार बना रहता है– जैसे आयुष्मानो!जिस पेड़ की शाखाये तथा पत्ते बने रहते हैं, उसकी पपड़ी, उसकी त्वचा, उसका फेग्गु तथा उसका सार भी पूर्णता को प्राप्त होता है। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो शीलवान होता है,जिसका शील खंडित नहीं होता, उसका सम्यक समाधि का आधार बना रहता है; सम्यक समाधि के रहने पर सम्यक समाधि के खंडित न होने पर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शन का आधार बना रहता है; यथार्थ ज्ञान-दर्शन के रहने पर, यथार्थ ज्ञान-दर्शन के खंडित न होने पर,निर्वेद-वैराग्य का आधार बना रहता है;निर्वेद-वैराग्य के रहने पर,निर्वेद-वैराग्य के रहने पर,निर्वेद-वैराग्य खंडित न होने पर,विमुक्ति ज्ञान-दर्शन का आधार बना रहता है।

९. खिप्पनिसन्तिसुत्तं

१६९. तब आयुष्मावान आनन्द जहां आयुष्मावान सारिपुत्र थे, वहां गये। पास जाकर आयुष्मावान सारिपुत्र के साथ कुशल-क्षीम की बातचीत की। कुशल-क्षम की बातचीत समाप्त हो जाने पर, आयुष्मावान आनन्द एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान आनन्द ने आयुष्मावान सारिपुत्र से यह कहा–

आयुष्मान सारिपुत्र! कौन-से गुण होने सेभिक्षु कुशल-धर्मों के प्रतिक्षिप्र-ध्यान देने वाला कहा जाता है, सम्यक प्रकार ग्रहण करने वाला तथा ग्रहण की हुई बात को धारणकिये रखने वाला? सारिपुत्र बोले– ‘आयुष्मान आनन्द बहुत-श्रुत हैं। आयुष्मान आनन्द ही इसविषय में अपना मत कहें।’ “तो आयुष्मावान सारिपुत्र सुनें। भली प्रकार मन में धारण करें। कहूंगा।” “बहुत अच्छा” कह आयुष्मान सारिपुत्रने आयुष्मावान आनन्द को प्रतिवचनदिया। आयुष्मान आनन्द ने यह कहा–

“आयुष्मान! सारिपुत्र!भिक्षु अर्थ करने में कुशल होता है, धर्म केविषय में कुशल होता है, शब्दों की व्युत्पत्ति [=नियुक्ति] केविषय में कुशल होता है, शब्दों [= व्यंजन] केविषय में कुशल होता है। ओर क्रम [= पूर्वा पर] केविषय में कुशल होता है। आयुष्मान सारिपुत्र! ये पांच गुण होने सेभिक्षु कुशल-धर्मो के प्रतिक्षिप्र-ध्यान देने वाला कहा जाता है, सम्यक प्रकार ग्रहण करने वाला तथा ग्रहण की हुई बात को धारणकिये रहने वाला।” “आश्चर्य है, अद्भुत है यह जो आयुष्मान आनन्द का सुभाषित है। हमारी मान्यता हैकि आयुष्मान आनन्द में ये पांचों गुण हैं। आयुष्मान आनन्द अर्थ-कुशल हैं, धर्म-कुशल हैं,निरुक्ति-कुशल हैं, व्यंजन-कुशल हं तथा पूर्वापर कुशल हैं।”

१०. भद्दजिसुत्तं

१७०. एक समय आयुष्मावान आनन्द कौशाम्बी के घोषिताराम मेंविहार कर रहे थे। तब आयुष्मान भद्रजित जहां आयुष्मान आनन्द थे वहां आये। पास आकर आयुष्मान आनन्द से कुशल-क्षेम की बातचीत की। कुशल-क्षेम की बातचीत हो चुकने पर आयुष्मान भद्रजित एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान भद्रजित से आयुष्मान आनन्द ने ये प्रश्न पूछा– “आयुष्मान भद्रजित! दर्शनीयों में श्रेष्‍ठतम क्या है? श्रवणीयों में श्रेष्‍ठतम क्या है? मुखों में श्रेष्‍ठतम क्या है? संज्ञाओं में श्रेष्‍ठतम क्या है? भवों में श्रेष्‍ठतम क्या है?”

“आयुष्मान! ब्रह्म है जो सर्वोपरि है,जिसके ऊपर कोई नहीं है, जो द्रष्टा है तथा जो वशवर्ती है। जो कोई उस ब्रह्मा को देखता है, वह देखने वालों में श्रेष्‍ठतम है। “आयुष्मान! आभश्वर नामक देवता हैं, वे सुख से सम्पूर्न हैं, सुख से परिपूर्न हैं। वे कभी-कभी उल्‍लास-वाक्य कहते हैं– ओह! सुख है। ओह! सुख है। जो उस शब्द को सुनता है, वह सुनने वालों में श्रेष्‍ठतर है। “आयुष्मान! शुभ-कृष्ण नामक देवता हैं। वे शांति की तरह सुख का अनुभव करते हैं। यह सुखों में श्रेष्‍ठतम है। “आयुष्मान! आकिञ्‍चायतन तक पहुंचने वाले देवता हैं। यह संज्ञाओं में श्रेष्‍ठतम है। “आयुष्मावान! नेवसञ्‍ञानासाञ्‍ञायतन तक पहुंचने वाले देवता हैं। यह भवों में अग्र हैं।” “आयुष्मान भद्रजित की यह बात-चीत बहुत जनों के कथन से मेल खाती है।”

“आयुष्मावान आनन्द बहुश्रुत हैं। आयुष्मावान जैसा लगे वैसा कहें।” “तो आयुष्मावान भद्रजित! सुनें। अच्छी तरह मन में धारण करें। मैं कहता हूं।” “बहुत अच्छा आयुष्मान!” कह आयुष्मावान भद्रजितने आयुष्मावान आनन्द को प्रतिवचनदिया। आयुष्मावान आनन्दने यह कहा–

“आयुष्मावान!जिस प्रकार देखने से देखने के अनन्तर आस्रवों का क्षय होता है, ऐसा देखना दर्शनों में श्रेष्‍ठतम है।जिस प्रकार सुननेसे, बाद में आस्रवों का क्षय होता है, ऐसा सुनना श्रवणों में श्रेष्‍ठतम है।जिस प्रकार के सुख की अनुभूति से बादमीं आश्रवों का क्षय होता है, यह सुखों में श्रेष्‍ठतम है।जिस प्रकार की संज्ञाओं का अनुभव करने से, बाद में आस्रवों का क्षय होता है, यह संज्ञाओं में श्रेष्‍ठतम है।जिस प्रकार के भव के अनन्तर आस्रवों का क्षय होता है, यह भवों में श्रेष्‍ठम है।

३. उपासकवग्गो

१. सारज्‍जसुत्तं

१७१. एक समय भगवान श्रावस्ती के जेतवनाराम मेंविहार कर रहे थे। वहां भगवान नेभिक्षुओं को संबोधितकिया–

“भिक्षुओ!” “भदंत” कहकर उनभिक्षुओंने भगवान को प्रतिवचनदिया। तब भगवान ने यह कहा–भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती है, वहनिस्तेजता को प्राप्त होता है। कौन-सी पांच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोगों के संबंध मेंमिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन करने वाला होता है।भिक्षुओ!जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वहनिस्तेजता को प्राप्त होता है।

भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह पंडित होता है। कौन सी पांच बातें? वह प्राणी-हिंसा सेविरत रहता है, चोरी सेविरत रहता है, कामभोग संबंधीमिथ्याचार सेविरत रहता है, झूठ बोलने सेविरत रहता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों के सेवन सेविरत रहता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वहविशारद [= पंडित] होता है।

२. विसारदसुत्तं

१७२.भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह अविशारद बना रहकर ही गृहवास करता है। कौन-सी पांच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोग संबंधीमिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन करने वाला होता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह अविशारद बना रह कर ही गृह-वास करता हैं।

भिबुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं वहविशारद [पंडित] बना रहकर ही गुहवास करता है। कौन-सी पांच बातें? वह प्राणी-हिंसा सेविरत रहता है.....सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों के सेवन सेविरत रहता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वहविशारद होकर ही गृहवास करता है।

३. निरयसुत्तं

१७३.भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर नरक में ही डालदिया गया हो। कौन-सी पांच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोग-संबंधीमिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन करने वाला होता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, उसे जैसे लाकर नरक में ही डालदिया गया हो।

भिक्षुओ,जिसभिक्षु में ये पांच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर स्वर्ग में ही डालदिया गया हो। कौन-सी पांच बातें? वह प्राणी-हिंसा सेविरत होता है.....सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन करने सेविरत होता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, उसे जैसे लाकर स्वर्ग में ही डालदिया गया हो।

४. वेरसुत्तं

१७४. उस समय अनाथपिण्डिक गृहपति जहां भगवान थे, वहां गये। पास जाकर भगवान को नमस्कार कर, एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपति को भगवान ने यह कहा–

हे गृहपति! ये पांच भय हैं, अहितकर बातें [= वैर] हैं,जिन्हेंबिना छोड़े आदमी दुश्शील कहलाता है, और नरक में जन्म ग्रहण करता है। कौन-सी पांच बातें? प्राणी-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ बोलना, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन। हे गृहपति! ये पांच भय हैं, अहितकर बातें [= वैर] हैं,जिन्हेंबिना छोड़े आदमी दुश्शील कहलाता है, और नरक में जन्म ग्रहण करता है।

हे गृहपति! ये पांच भय हैं, अहितकर बातें [= वैर] हैं,जिन्हें छोड़ देने से आदमी सुशील कहलाता है और स्वर्ग में जन्म ग्रहण करता है। कौन-सी पांच बातें? प्राणी-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ बोलना, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन। हे गृहपत! ये पांच भय हैं, अहितकर बातें [= वैर] हैं,जिन्हें छोड़ देने से आदमी सुशील कहलाता है और स्वर्ग में जन्म ग्रहण करता है।

हे गृहपति! प्राणी-हिंसा करने के फल-स्वरूप आदमी को इसी जन्म में जो दुःख पैदा होता है, मरने के अनन्तर भी जो भय-दुःख पैदा होता है तथा जो मानसिक दुःख होता है, प्राणी-हिंसा सेविरत रहने के फल-स्वरूप न इसी जन्म में होने वाला भय-दुःख होता है, न मरने के अनन्तर होने वाला भय-दुःख होता है तथा न मानसिक-दुःख होता है। इस प्रकार, प्राणी-हिंसा सेविरत रहने वाले का जो भय-दुःख होता है, वह शांत हो जाता है।

गृहपति! चोरी करने के फलस्वरूप.....व्यभिचार के फलस्वरूप.....झूठ बोलने के फलस्वरूप.....सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजें सेवन करने के फलस्वरूप आदमी को इसी जन्म में जो भय-दुःख पैदा होता है, मरने के अनन्तर, जो भय-दुःख पैदा होता है, तथा जो मानसिक दुःख होता है। इसी प्रकार सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों के सेवन सेविरत रहने से न इसी जन्म में होने वाला भय-दुःख होता है, न मरने के अनन्तर होने वाला भय-दुःख होता है तथा न मानसिक दुःख होता है।भिक्षुओ, जो सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजों के सेवन से पृथक रहता है, उसका भय-दुःख शांत हो जाता है।

यो पाणं अतिपातेति मुसावादंच भासति,

लो के अदिन्‍नं आदियति परदारं च गच्छति॥

सुरामेरयपानञ्‍च यो नरो अनुयुञ्‍जति

अप्पहाय पंच वेरानि दुस्सीलो इति वुच्‍चति॥

कायस्स भेदा दुप्पञ्‍ञोनिरयं सोपपज्‍जति,

यो पाणं नातिपातेति मुसावादं न भासति॥

लो के अदिन्‍नं नादियति परदारं न गच्छति,

सुरामेरयपानं च यो नरो नानुयुञ्‍जति

पहाय पंच वेरानि सीलवा इति वुच्‍चति,

कायस्स भेदा सप्पञ्‍ञो सुगतिं सोपज्‍जति॥

[जो प्राणी-हिंसा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, पर-स्त्री गमन करता है, सुरामेरय आदि नशीली चीजों का सेवन करता है– जो इन पांच अहितकर बातों को नहीं छोड़ता, वह दुश्शील कहलाता है। वह मूर्ख मरने के अनन्तर, नरक में जन्म ग्रहण करता है। जो प्राणी-हिंसा नहीं करता, झूठ नहीं बोलता, चोरी नहीं करता, पर-स्त्री गमन नहीं करता, तथा सुरामेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करता है– जो इन पांच अहितकर बातों सेविरत रहता है, वह सुशील कहलाता है। वह प्रज्ञावान मरने के अनन्तर सर्वर्ग में जन्म ग्रहण करता है।]

५. चण्डालसुत्तं

१७५.भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह चांडाल-उपासक कहलाता है, मलिन-उपासक कहलाता है,निकृष्‍ठ-उपासक कहलाता है। कौन-सी पांच बातें? वह अश्रद्धावान होता है, दुश्शील होता है, भले-बुरे शकुनों मेंविश्वास करने वाला होता है, भले-बुरे शकुनों की ओर देखता रहता है, अपने कर्मों की ओर नहीं, इस [= बुद्ध] शासन से बाहर दक्षिणा के पात्र खोजता है और वही दान-मान आदि पूर्व-कृत्य करता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह चांडाल-उपासक कहलाता है, मलिन-उपासक कहलाता है,निकृष्‍ठ-उपासक कहलाता है।

भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह उपासक-रत्न कहलाता है, उपासक-पद्म कहलाता है, उपासक-पुण्डरीक कहलाता है। कौन-सी पांच बातें? वह श्रद्धावान होता है, सुशील होता है, भले-बुरे शकुनों मेंविशास करने वाला नहीं होता है, भले-बुरे शकुनों की ओर न देखता रहकर अपने कर्मों की ओर देखता है, इस [बुद्ध-] शासन ने से बाहर दक्षिणा के पात्र न खोज, यहीं दान-मान आदि पूर्व-कृत्य करता है।भिक्षुओ,जिस उपासक में ये पांच बातें होती हैं, वह उपासक-रत्न कहलाता है, उपासक-पद्म कहलाता है, उपासक-पुण्डरीक कहलाता है।

६. पीतिसुत्तं

१७६. उस समय पांच सौ उपासकों को साथलिये अनाथपिण्डिक उपासक जहां भगवान थे, वहां पहुंचा। पास जाकर भगवान को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपति को भगवान ने यह कहा–

हे गृहपति! आप लोगोंने चीवर,भिक्षा, शयनासन तथा रोगी की आवश्यकताओं सेभिक्षु-संघ की सेवा की है। हे गृहपति! इतने मात्र से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहियेकि हम लोगों ने चीवर-भिक्षा-शयनासन तथा रोगी की आवश्यकताओं सेभिक्षु-संघ की सेवा की है। इसलिये हे गृहपति! यह सीखना चाहियेकि समय समय पर एकांत प्रीति-सुख का अनुभव करेंगे।

ऐसा कहने पर आयुष्मान सारिपुत्र ने भगवान से कहा– भन्ते! यह आश्चर्यकर है। भन्ते यह अद्भुत है। भन्ते! यह जो आपका सुभाषित हैकि हे गृहपति! आप लोगोंने चीवर,भिक्षा, शयनासन तथा रोगी की आवश्यकताओं सेभिक्षु संघ की सेवा की है। हे गृहपति! इतने मात्र से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहियेकि हम लोगोंने चीवर-भिक्षा-शयनासन तथा रोगी की आवश्यकताओं सेभिक्षु-संघ की सेवा की है। इसलिये हे गृहपति! यह सीखना चाहियेकि हम समय-समय पर एकांत प्रीति-सुख का अनुभव करेंगे। भन्ते।जिस समय आर्य-श्रावक एकांत प्रीति-सुख का अनुभव करता है, उस समय उसे पांच बातों की अनुभूति नहीं होती। यह जो काम-भोग से उत्पन्‍न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो काम-भोग से उत्पन्‍न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्म से उत्पन्‍न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्म से उत्पन्‍न सुख-सौमनस्र होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो कुशल कर्म से उत्पन्‍न दुःख दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती। भन्ते!जिस समय आर्य-श्रावक एकांत प्रीति-सुख का अनुभव करता है, उस समय उसे इन पांच बातों की अनुभूति नहीं होती।

“सारिपुत्र! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। सारिपुत्र!जिस समय आर्य-श्रावक एकांत प्रीति-सुख का अनुभव करता है, उस समय उसे पांच बातों की अनुभूति नहीं होती। यह जो काम-भोगों से उत्पन्‍न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो काम-भोगों से उत्पन्‍न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्म से उत्पन्‍न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्म से उत्पन्‍न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो कुशल-कर्म से उत्पन्‍न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती। हे सारिपुत्र!जिस समय आर्य-श्रावक एकांत-प्रीति सुख का अनुभव करता है, उस समय उसे इन पांच बातों की अनुभूति नहीं होती।

७. वणिज्‍जासुत्तं

१७७.भिक्षुओ, ये पांच व्योपार उपासक केलिये अकरणीय हैं। कौन-से पांच? अस्रों-शस्रों का व्यापार, प्राणियों [= मनुष्यों] का व्यापार, मांस का व्यापार, मद्य का व्यापार तथाविष का व्यापार।भिक्षुओ, ये पांच व्योपार उपासक केलिये अकरणीय हैं।

८. राजासुत्तं

१७८.भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना हैकि अमुक आदमी ने प्राणी-हिंसा का त्याग करदिया है, वह प्राणी-हिंसा सेविरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसा सेविरत रहने के कारण, मारते हों या बांधते हों, देशनिकाला देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हों? “भन्ते! नहीं।” ठीक हैभिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना हैकि अमुक आदमीने प्राणी-हिंसा का त्यागकरदिया हो, वह प्राणी-हिंसा सेविरत हो और उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसा सेविरत रहने के कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हों। हां, वे उसने जैसा पाप-कर्मकिया रहता है वैसा ही उसकी घोषणा करते हैंकि इस आदमी ने स्त्री या पुरुष की हत्या की। तब उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसा करने के कारण मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है? “भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।”

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना हैकि अमुक आदमी ने चोरी का त्यागकरदिया है, वह चोरी सेविरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर चोरी सेविरत रहने के कारण, मारते हों या बांधते हों, देश-निकाला देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हों? “भन्ते! नहीं।” ठीक हैभिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है,कि अमुक आदमी ने चोरी का त्यागकरदिया हो, वह चोरी सेविरत हो, और उसे राज-पुरुष पकड़कर चोरी सेविरत रहने के कारण, मारते हों, बांधते हों, देशनिकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हों। हां, वे उसने जैसा पाप-कर्मकिया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैंकि इस आदमी ने गांव या जंगल से चोरी की है। तब उसे राज-पुरुष पकड़ कर चोरी करने की कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है? “भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।”

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना हेकि अमुक आदमीने व्यभिचार का त्याग करदिया है, वह व्यभिचार सेविरत है, उसे राज-पुरुष पकड़ कर व्यभिचार सेविरत रहने के कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हों? “भन्ते! नहीं!” ठीक हैभिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना हैकि अमुक आदमी ने व्यभिचार का त्याग करदिया हो, वह व्यभिचार सेविरत हो, और उसे राजपुरुष पकड़कर व्यभिचार सेविरत रहने के कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दण्डित करते हों। हां, वे उसने जैसा पाप-कर्मकिया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैंकि इस आदमी ने पराईस्त्रियों के साथ, पराई कुमारियों के साथ सहवासकिया है। तब उसे राजपुरुष पकड़कर व्यभिचार करने के कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है, या सुना है? “भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।”

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना हैकि अमुक आदमी ने झूठ का त्याग करदिया है, वह झूठ सेविरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर झूठ सेविरत रहने के कारण, मारते हों या बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दण्डित करते हों? “भन्ते! नहीं।” ठीक हैभिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना हैकि अमुक आदमी ने झूठ बोलने का त्याग करदिया हो, वह झूठ बोलने सेविरत हो और उसे राज-पुरुष पकड़कर झूठ बोलने सेविरत रहने के कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दण्डित करते हों। हां, वे, उसने जैसा पाप-कर्मकिया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैंकि इस आदमीने गृहपति वा गृहपति-पुत्र से झूठ बोलकर अपना मतलबसिद्ध करता है। तब उसे राज-पुरुष पकड़कर झूठ बोलने के कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देशनिकाला दे देते हैं अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है, या सुना है? “भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।”

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना हैकि अमुक आदमी ने सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजों का त्याग करदिया है, वह सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों सेविरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजों सेविरत रहने के कारण, मारते हें या बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हों। हां, वे, उसने जैसा पाप-कर्मकिया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैंकि इस आदमी ने सुरा-मेरय आदि के नशे में इस स्त्री या पुरुष की हत्या कर डाली। इस आदमी ने सुरा-मेरय आदि के नशे में गांव या जंगल से चोरी की; इस आदमी ने सुरा-मेरय आदि के नशे में पराईस्त्रियों के साथ, पराई कुमारियों के साथ सहवासकिया है, इस आदमीने सुरा-मेरय आदि के नशे में गृहपति या गृहपति-पुत्र से झूठ बोलकर अपना मतलब पूराकिया है। तब उसे राज-पुरुष पकड़कर सुरा-मेरय आदि नशीली चीजों का सेवन करने के कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्यकिसी दंड से दंडित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है? “भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।”

९. गिहिसुत्तं

१७९. उस समय पांच सौ उपासकों सेघिरा हुआ अनाथपिण्डिक जहां भगवान थे, वहां पहुंचा। पास जाकर भगवान को अभिवादन कर एक ओर बैठा। तब भगवान ने आयुष्मावान सारिपुत्र को संबोधितकिया– सारिपुत्र! जो कोई श्वेतवस्त्रधारी गृहस्थ ऐसा हो जो पांचविषयों में संयतेन्द्रिय हो, जो चारों प्रत्यक्ष सुखानुभव स्वरूप चैतसिक ध्यानों को अनायास,बिना कष्ट के प्राप्त कर सकता हो– वह यदि चारे तो वह स्वयं अपने बारे में यह घोषणा कर सकता है– मेरी नरक में जन्म ग्रहण करने की संभावना क्षीण हो गई, मेरी पशु-योनि में जन्म ग्रहण करने की संभावना क्षीण हो गई, मेरी अपाय-दुःख में पड़ने की संभावना क्षीण हो गई, मैं स्त्रातपान्‍न हो गया हूं, मैं पतन्मुख नहीं हूं, मेरी संबोधि-प्राप्तिनिश्चित है।

वहकिन पांचविषयों [= कर्मों] में संयतेन्द्रिय होता है। सारिपुत्र! आर्य-श्रावक प्राणी-हिंसा सेविरत होता है, चोरी सेविरत होता है, कामभोग संबंधीमिथ्याचार सेविरत होता है, झूठ बोलने सेविरत होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीले पदार्थों के सेवन सेविरत होता है। वह इन पांचविषयों [= कर्मों] में संयतेन्द्रिय होता है।

वहकिन चार प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानों को अनायास,बिना कष्ट के प्राप्तकर सकने वाला होता है? सारिपुत्र! आर्य-श्रावक बुद्ध के प्रति अविचल श्रद्धा से युक्त होता है, वह भगवान अर्हत हैं, सम्यक संबुद्ध हैं,विद्या तथा आचरण से युक्त हैं, सुगत हैं, लोक-विदु हैं, अनुपम हैं, [दुष्ट-] पुरुषो का दमन करने वाले सारथी हैं, देवताओं तथा मनुष्यों के शास्ता हैं, भगवान बुद्ध हैं। यह उसका प्रथम प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्धचित्त की शुद्धि का कारण होता है तथा मैंलेचित्त कीनिर्मलता का कारण होता है।

फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक धर्म के प्रति अविचल श्रद्धा से युक्त होता है– भगवान द्वारा उपदिष्ट धर्म अच्छी प्रकार समझाकर देशनाकिया गया है, वह सांदृष्टिक [= प्रत्यक्ष]-धर्म है, वह काल के बंधन से परे है, उसके बारे में यह कहा जा सकता हैकि आओ और स्वयं परीक्षा कर के देख लो, [निर्वाण की ओर] ले जाने वाला है, प्रत्येकविज्ञ आदमी स्वयं जान सकता है। यह उसका दूसरा प्रत्यक्ष-सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान हो सकता है, जो अशुद्धचित्त की शुद्धि का कारण होता है तथा मैलेचित्त कीनिर्मलता का कारण होता है।

फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक संघ के प्रति अविचल श्रद्धा से युक्त होता है– भगवान का श्रावक-संघ सुप्रतिपन्‍न है, भगवान का श्रावक संघ ऋजु [मार्ग पर] प्रतिपन्‍न है, भगवान का श्यावक संघ न्याय [मार्गपर] प्रतिपन्‍न है, भगवावान का श्रावक संघ उचित पथ पर प्रतिपन्‍न है– पुरुषों के ये जो चार जोड़े हैं, ये जो [स्रोतापन्‍न-मार्ग स्रोतापन्‍न-फल प्राप्त आदि] आठ पुद्गल हैं– यही भगवान का श्रावक-संघ हैं। यह आदर करने योग्य है। यह सत्कार करने योग्य है। यह दक्षिणा के योग्य है। यह हाथ जोड़ने योग्य है। यह लोगों केलिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। यह उसका तीसरा प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्धचित्त की शुद्धि का कारण होता है तथा मैलेचित्त कीनिर्मलता का कारण होता है।

फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक आर्य-श्रेष्‍ठ शीलों से युक्त होता है, जो अखंडित होते हैं, जोछिद्र रहित होते हैं, जोबिना धब्बे के होते हैं, जोबिना दाग के होते हैं, जो स्वतंत्र होते हैं, जोविज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसित होते हैं, जो अछूते होते हैं तथा जो समाधि-प्राप्ति में सहायक होते हैं। यह उसका चौथा प्रत्यक्ष सुखानुभव स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्धचित्त की शुद्धि का कारण होता है तथा मैलेचित्त कीनिर्मलता का कारण होता है। वह उन चारों प्रत्यक्षसुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानों की अनायास,बिना कष्ट के प्राप्तकिये रहने वाला होता है।

सारिपुत्र! जो कोई श्वेत वस्त्र धारी गृहस्थ ऐसा हो जो पांचविषयों में संयतेन्द्रिय हो, जो चारों प्रत्यक्षसुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानों को अनायास,बिना कष्ट के प्राप्त कर सकता हो, वह यदि चाहे तो स्वयं अपने बारे में यह घोषणा कर सकता है– मेरी नरक में जन्म ग्रहण करने की संभावना क्षीण हो गई, मेरी पशु-योनि में जन्म ग्रहण करने की संबावना क्षीण हो गई, मेरी अपाय-दुःख में पड़ने की संभावना क्षीण हो गई, मैं स्रोतापन्‍न हो गया हूं, मैं पतनोन्मुख नहीं हूं, मेरी संबोधि-प्राप्तिनिश्चित है।

निरयेसु भयंदिस्वा पापानि परिवज्‍जये,

अरियधम्मं समादाय पंडितो परिवज्‍जये॥

न हिंसे पाणभूतानिविज्‍जमाने परक्‍कमे,

मुसा च न भणे जानं अदिन्‍नं न परामसे॥

सेहि दारेहि सन्तुठ्ठो परदारंच ना रमे,

मेरयं वारुणिं जन्तु नपिवेचित्तमोहनिं॥

अनुस्सरेय्य संबुद्धं धम्मं चानुवितक्‍कये,

अब्यापज्झंहितंचित्तं देवलोकाय भावये॥

उपट्ठिते देय्यधम्मे पुञ्‍ञत्थस्सजिगिंसतो,

सन्तेसु पठमंदिन्‍नाविपुला होति दक्खिणा॥

सन्तो हवे पवक्खामि सारिपुत्त सुणाहि मे,

इति कण्हासु सेतासु रोहिणीसुहिरीसु वा॥

कम्मासासु सरूपासु गोसु पारेतासु वा,

यासु कासु च एतासुदिन्‍नो जायति पुँगवो॥

धोरय्हो बलसम्पन्‍नो कल्याणजवनिक्‍कमो,

तमेव भारे युजन्ति नास्स वण्णं परिक्खरे॥

एवमेव मनुस्सेसु यस्मिं कस्मिचिं जातिये,

खतिये ब्राह्मणवेस्से सुद्दे चण्डालपुक्‍कसे॥

यासु कासु च एतासु दन्तो जायति सुब्बतो,

धम्मट्ठो सीलसम्पन्‍नो सच्‍चवादी हरीमतो।

पहीणजातिमरणो ब्रह्मचरियस्स केवली,

पन्‍नहारोविसंयुत्तो कतकिच्‍चो अनासवो॥

पारगु सब्बधम्मानं अनुपादायनिब्बुतो,

तस्मिंचविरजे खेत्तेविपुला होति दक्थिणा॥

बालाव अविजानन्ता दुम्मेधा अस्सुताविनो,

बहिद्धा देन्ति दानानि नहि सन्ते उपासरे॥

ये च सन्ते उपासेन्ति सप्पञ्‍ञे धीरसम्मते,

सद्धा च नेसं सुगते मूखजाता पतिट्ठिता॥

देवलोकं च ते यन्ति तुले वा इध जायरे,

अनुपुब्बेननिब्बाणं अधिगच्छति पंडिता॥

[नरक भय का ध्यानकर पंडित को चाहियेकि आर्य-धर्मो सम्यक प्रकार ग्रहण कर पापों से दूर रहे। पराक्रम रहते प्राणि-हिंसा न करे, झूठ न बोले, जानबूझकर दूसरे की चोरी न करे। अपनी स्त्री से संतुष्ट रहे, पराई स्त्री से रमण न करे। आदमी को चाहियेकि उसे मूढ़ बना देने वाली वारुणी का पान न करे। संबुद्ध का अनुस्मरण करे, धर्म काचिन्तन करे और देवलोक [= ब्रम्हलोक] की प्राप्तिलिये क्रोध-रहित मैत्रीचित्त की भावना करे। जब दान करने केलिये कुछ उपस्थित हो और पुण्य की कामना हो तो प्रथम शांतचित्तों को दे। उन कोदिया गया दान महाफलदायी होती है। हे सारिपुत्र! तू मेरी बात सुन। जब ज्ञान-चित्तो के बारे में कहता हूं। इन गौवों वा पारेताओं [?] में सेजिसकिसी से भी– चाहे उनका रंग काला हो, चाहे श्वेत हों, चाहे लाल हों, चाहेहिरी [?] हों, चाहेचितकबरी हों– ऐसा श्रेष्‍ठ बैल पैदा होता है जो [भार] ढो सकने वाला होता है, जो बलवान होता है,जिसकी अच्छी चाल होती है, उसी पर भार लादा जाता है, उसके रंग की परीक्षा नहीं की जाती। इसी प्रकार आदमियों में कोईकिसी भी जाति का हो– चाहे क्षत्रिय हो, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे वैश्य हो, चाहे शूद्र हो, चाहे चाण्डाल हो, चाहे भंगी हो– यदि वह सुब्रत है, यदि वह धर्म-स्थित है, यदि वह शीलसंपन्‍न है, यदि वह सत्यवादी है, यदि वह भय [-लज्‍जा] युक्त है, यदि वह जरा-मरण के बंधन से परे है, यदि वह पूर्ण रूपमे ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला है, यदि वह भार-मुक्त है, यदि वह आसक्ति-रहित है, यदि वह कृत-कृत्य है, यदि वह अनास्रव है, यदि वह सभीविषयों [= धर्मों] से परे है और उसने पूर्णनिर्वाण प्राप्त करलिया है तो ऐसे रज-रहित [निर्मल] व्यक्ति को यदि दानदिया जाता है, तो उस दान का महान फल होता है। जो मूर्ख होते हैं, जो अज्ञ होते हैं, जो दुर्बुद्धि होते हैं, जो अश्रुत [= अज्ञानी] होते हैं, वे बाहर [-अन्यों पुरुषों की संगति करते हैं, उनके मन में सुगत के प्रति दृढ़ श्रद्धा प्रतिष्‍ठित है। वे या तो देवलोक को प्राप्त होते हैं अथवा यहां उत्पन्‍न होने पर [श्रेष्‍ठ-] कुल में उत्पन्‍न होते हैं। ऐसे पंडित जन क्रमशःनिर्वाण की प्राप्ति करते हैं।]

१०. गवेसीसुत्तं

१८०. एक समय भगवान कोशल [जनपद] में महानभिक्षु-संघ के साथ चारिका कर रहे थे। रास्ता चलते हुए भगवान ने एक प्रदेश में एक बड़ा शालवन देखा। देखकर, रास्ता छोड़,जिधर वह शालवन था, उधर बढ़े। पास जाकर, उस शालवन का अवगाहन कर, एक प्रदेश में मुस्कराये।

तब आयुष्मावान आनन्द के मन में यह हुआ– भगवान के मुस्कराने का क्या हेतु है, क्या कारण है? तथागत कभी अकारण नहीं मुस्कराते हैं। तब आयुष्मान आनन्द ने भगवान से यह कहा– भन्ते! भगवान के मुस्कराने का क्या हेतु है, क्या कारण है? तथागत कभी अकारण नहीं मुस्कराते हैं।

आनन्द! पुराने समय में यहां एक नगर था– स्मृद्ध, ऐश्वर्य-युक्त तथा जनाकीर्ण। आनन्द! भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध उसी नगर के आश्रय रहते थे। आनन्द! भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध का गवेसी नाम का एक उपासक था। वह अपूर्ण सदाचारी था। आनन्द! गवेसी उपासक द्वाराशिक्षा-पद ग्रहण कराये गये पांच सौ दूसरे उपासक भी थे। वे भी अपूर्ण सदाचारी थे। आनन्द! तब गवेसी उपासक के मन में यह बात आई– मैं इन पांच सौ उपासकों का बहुत उपकार करने वाला हूं, आगे आगे चलने वाला हूं, शील ग्रहण कराने वाला हूं। मैं अपूर्ण सदाचारी हूं। ये पांच सौ उपासक भी अपूर्ण सदाचारी हैं। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भीविशेषता नहीं है। मैं अब इन से कुछविशिष्ट बनने केलिये प्रयास करूं।

तब आनन्द! वह गवेसी उपाक उन पांच सौ उपासकों के पास गया। पास जाकर उन पांच सो उपासकों से बोला– ‘आयुष्मानो! आज के बाद से तुम यह मान लोकि मैं पूर्ण सदाचारी हूं।’ तब आनन्द! उन पांच सौ उपासकों के मन में यह बात आई– आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, ह में शीलों में प्रतिष्‍ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी पूर्ण सदाचारी बनने जा रहे हैं। हम भी क्यों न बनें? तब आनन्द! वह पांच सौ उपासक जहां गवेसी उपासक था, वहां पहुंचे। पास जाकर गवेसी उपासक से बोले– ‘आर्य गवेसी! आज के बाद से हम पांच सौ उपासकों को भी पूर्ण सदाचारी मानें।’ तब आनन्द गवेसी उपासक के मन में यह बात आई– “मैं इन पांच सौ उपासकों का बहुत उपकार करने वाला हूं, आगे आगे चलने वाला हूं, शील ग्रहण कराने वाला हूं। मैं संपूर्ण सदाचारी हूं। ये पांच सौ उपासक भी संपूर्ण सदाचारी हैं। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भीविशेषता नहीं है। मैं अब इन से कुछविशिष्ट बनने केलिये प्रयास करूं।’

तब आनन्द! वह गवेसी उपासक उन पांच सौ उपासकों के पास गया। पास जाकर उन पांच सौ उपासकों से बोला– ‘आयुष्मानो! आज के बाद से तुम लोग मूझे ब्रह्मचारी मानो– ग्राम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत।’ तब आनन्द! उन पांच सौ उपासकों के मन में यह बात आई– आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, ह में शीलों में प्रतिष्‍ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी ब्रह्मचारी बनने जा रहे हैं– ग्राम्य मैथून धर्म से सर्वथाविरत। हम भी क्यों न बनें? तब आनन्द! वह पांच सौ उपासक जहां गवेसी उपासक था, वहां पहुंचे। पास जाकर गवेसी उपासक से बोले– ‘आर्य गवेसी! आज के बाद से हम पांच सौ उपासकों को भी ब्रह्मचारी मानें– गाम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत।’ तब आनन्द! गवेसी उपासक के मन में यह बात आई– ‘मैं इन पांच सौ उपासकों का बहुत उपकार करने वाला हूं, आगे आगे चलने वाला हूं, शीलग्रहण कराने वाला हूं। मैं पूर्ण सदाचारी हूं। ये पांच सौ उपासक भी पूर्ण सदाचारी है। मैं ब्रह्मचारी हूं– ग्राम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत। हम भी क्यों न बनें? तब आनन्द! वह पांच सौ उपासक जहां गवेसी उपासक था, वहां पहुंचे। पास जाकर गवेसी उपासक से बोले– ‘आर्य गवेसी! आज के बाद से हम पांच सौ उपासकों का भी ब्रह्मचारी मानें– ग्राम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत।’ तब आनन्द! गवेसी उपासक के मन में यह बात आई– ’मैं इन पांच सौ उपासकों का बहुत उपकार करने वाला हूं, आगे आगे चलने वाला हूं, शीलग्रहण कराने वाला हूं। मैं पूर्ण सदाचारी हैं। मैं ब्रह्मचारी हूं– ग्राम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत। ये पांच सौ उपासक भी ब्रह्मचारी हैं– गाम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भीविशेषता नहीं है। मैं अब इनसेविशिष्ट बनने केलिये प्रयास करूं।’

तब आनन्द! वह गवेसी उपासक उन पांच सौ उपासकों के पास गया। पास जाकर उन पांच सौ उपासकों से बोला– ‘आयुष्मानो! आज के बाद से तुम लोग मुझे एकाहारी मानो– रात्रि भोजन सेविरत,विकाल-भोजन से सर्वथाविरत।’ तब आनन्द! उन पांच सौ उपासकां के मन में यह बात आई– आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक है, आगे आगे चलने वाले हैं, हमे शीलों में प्रतिष्‍ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी एकाहारी बनने जा रहे हैं– रात्रि भोजन सेविरत,विकाल-भोजन से सर्वथाविरत। हम भी क्यों न बनें? तब आनन्द! वह पांच सौ उपासक जहां गवेसी उपासक था, वहां पहुंचे। पास जाकर गवेसी उपासक से बोले– ‘आर्य गवेसी! आज के बाद से हम पांच सौ उपासकों को भी एकाहारी मानें– रात्रि भोजन सेविरत,विकाल-भोजन से सर्वथाविरत।’ तब आनन्द! गवेसी उपासक के मन में यह बात आई– ‘मैं इन पांच सौ उपासकों का बहुत उपकार करने वाला हूं, आगे आगे चलने वाला हूं, शील ग्रहण कराने वाला हूं। मैं सम्पूर्न सदाचारी हूं। यह पांच सौ उपासक भी संपूर्ण सदाचारी हैं। मैं ब्रह्मचारी हूं– गाम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत। ये पांच सौ उपासक भी ब्रह्मचारी हैं– गाम्य मैथुन धर्म से सर्वथाविरत। मैं एकाहारी हूं– रात्रि भोजन सेविरत,विकाल-भोजन से सर्वथाविरत। ये पांच सौ उपासक भी एकाहारी हैं– रात्रि भोजन सेविरत,विकाल-भोजन से सर्वथाविरत। हम दोनों ही समान हैं। मैरी कुछ भीविशेषता नहीं है। मैं अब इनसे कुछविशिष्ट बनने केलिये प्रयास करूं!

तब आनन्द! गवेसी उपासक जहां भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध थे, वहां गया। पास जाकर उन भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध से कहा– ‘भन्ते! भगवान के पास से मुझे प्रव्रज्यामिले, मुझे उपसंपदामिले।’ आनन्द! गवेसी उपासक को भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध के पास से प्रव्रज्यामिल गई, उपसंपदामिल गई। आनन्द! उपसंपन्‍न होने के थोड़े ही समय के भीतर गवेसीभिक्षु अकेले, एकांत में रहकर, अप्रमादी हो, प्रयत्नकर, साधना करते रहकर,जिस उद्देश्य की प्राप्ति केलिये कुल-पुत्र एकदम घर से बेघर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्य को शीघ्र ही, इसी जन्म में प्राप्त कर, साबात कर,विचरने लगा। उसे यहनिश्चय हो गयाकि जन्म [-मरण] का बंधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वास का उद्देश पूरा हो गया, जो करने का था, वह करलिया, अब यहां केलिये कुछ करणीय नहीं रहा। आनन्द! गवेसीभिक्षु एक अर्हत हो गये।

तब आनन्द! उन पांच सौ उपासकों के मन में यह बात आई– आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, ह में शीलों में प्रतिष्‍ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी केश-दाढ़ी मुंडवा, काषाय वस्त्र पहन, घर से बेघर हो, प्रव्रजित हो गये। हम भी क्यों न हो जायें? आनन्द! तब वे पांच सो उपासक जहां भगवान अर्हत सम्यक संबुद्ध थे, वहां पहुंचे। जाकर भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध से यहनिवेदनकिया– भन्ते! भगवान के पास से ह में प्रव्रज्यामिले, ह में उपसंपदामिले। आनन्द! उन पांच सौ उपासकों ने भगवान काश्यप अर्हत सम्यक संबुद्ध से प्रव्रज्या प्राप्त की, उपसंपदा प्राप्त की।

तब आनन्द! गवेसीभिक्षु के मन में यह बात आई– मैं इस अनुपमविमुक्ति सुख का अनायास लाभी हूं। क्या अच्छा हो यदि यह पांच सौभिक्षु भी इसविमुक्ति-सुख के अनायास लाभी हो सकें! तब आनन्द! वे पांच सौभिक्षु अकेले, एकांत में रहकर, अप्रमादी हो, प्रयत्न कर, साधन करते रहकर,जिस उद्देश्य की प्राप्ति केलिये कुलपुत्र एकदम घर से बेघर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्य को शीघ्र ही, इसी जन्म में प्राप्तकर, साक्षात कर,विचरने लगे। उन्हें यहनिश्चय हो गयाकि जन्म-मरण का बंधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वास का उद्देश्य पूरा हो गया, जो करने का था वह करलिया, अब यहां केलिये कुछ करणीय नहीं रहा।

आनन्द! गवेसी प्रमुख उन पांच सौभिबुओंने उत्तरोत्तर श्रेष्‍ठ से श्रेष्‍ठ उद्देश्य की ओर आगे बढ़ते हुए अनुपमविमुक्ति-सुख को प्राप्त करलिया। इसलिये आनन्द! यही सीखना चाहियेकि हम उत्तरोत्तर श्रेष्‍ठ से श्रेष्‍ठतर उद्देश्य की ओर आगे बढ़ते हुए अनुपमविमुक्ति-सुख को प्राप्त करेंगे। आनन्द! इसीलिये यही सीखना चाहिये।

[४] //आरण्यक वर्ग/

१. आरञ्‍ञिकसुत्तं

१८१.भिक्षुओ, ये पांच आरण्यक होते हैं। कौन-से पांच? [बुद्धि] मन्दता या मूढ़ता के कारण भी कोई कोई आरण्य-वासी [= आरण्यक] होते हैं। पापेच्छा के कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। उन्मत्त अथवाविक्षिप्त-चित्त होने के कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। बुद्ध और बुद्ध-श्रावकों के द्वारा अरण्यवास प्रशंसित होने के कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। अल्पेच्छता के ही कारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्‍ठ-जीवनबिताने की इच्छा के ही कारण, एकांत-जीवनप्रिय होनें के ही कारण, इतने से ही संतुष्ट रहने के ही कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है।भिक्षुओं, ये पांच आरण्यक होते हैं।भिक्षुओ, इन पांचों आरण्यकों में जो अल्पेच्छता के ही कारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्‍ठ-जीवनबिताने की इच्छा के ही कारण, एकांत-जीवनप्रिय होने के ही कारण, इतने से ही संतुष्ट रहने के कारण जो आरण्यक होता है, वही इन पांचों आरण्यकों में अग्र, श्रेष्‍ठ, प्रमुख, उत्तम और परम श्रेष्‍ठ कहलाता है।

भिक्षुओ, जैसे गौ से दूध होता है, दूध से ही दही, दही से नवनीत [= मक्खन] नवनीत से खी, घी से घी-माण्ड [?]– घी-माण्ड ही इन सब में श्रेष्‍ठ कहलाता है। इसी प्रकारभिक्षुओ, इन पांच प्रकार के आरण्यकों में जो अल्पेच्छता के ही कारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्‍ठ-जीवनबिताने की इच्छा के ही कारण, एकांत-जीवनप्रिय होने के कारण, इतने से ही संतुष्ट रहने के कारण जो आरण्यक होता है, वही इन पांचों आरण्यकों में अग्र, श्रेष्‍ठ, प्रुमुख, उत्तम और परम श्रेष्‍ठ कहलाता है।

२. चीवरसुत्तं

१८२.भिक्षुओ, ये पांच पांसुकूलिक [-धूल में पड़े चीथड़ों का बना चीवर पहनने वाले] हैं.....

३. रुक्खमूलिकसुत्तं

१८३.भिक्षुओ, ये पांच वृक्ष-मूलक [वृक्ष की ही छाया में रहने वाले] हैं.....

४. सोसानिकसुत्तं

१८४.भिक्षुओ, ये पांच श्मशानिक [श्मशान में ही रहने वाले] हैं.....

५. अब्भोकासिकसुत्तं

१८५.भिक्षुओ, ये पांच खुले आकाश के नीचे ही रहने वाले हैं.....

६. नेसज्‍जिकसुत्तं

१८६.भिक्षुओ, ये पांच बैठे ही रहने वाले होते हैं.....

७. यथासन्थतिकसुत्तं

१८७.भिक्षुओ, ये पांच जैसा भी आसनमिले वैसा ही ग्रहण करने वाले होते हैं.....

८. एकासनिकसुत्तं

१८८.भिक्षुओ, ये पांच एक ही आसन पर बैठकरभिक्षा ग्रहण करने वाले होते हैं.....

९. खलुपच्छाभत्तिकसुत्तं

१८९.भिक्षुओ, ये पांच सामान्य समय के बादभिक्षा की अस्वीकार करने वाले होते हैं.....

१०. पत्तपिण्डिकसुत्तं

१९०.भिक्षुओ, ये पांच केवलभिक्षा पात्र में प्राप्त भोजन ग्रहण करने वाले होते हैं। कौन-से पांच? [बुद्धि] मंदता या मूढ़ता के कारण भी कोई कोई पिंड-पातिक होता है। उन्मत्त अथवाविक्षिप्त-चित्त होने के कारण भी कोई-कोई पिंडपातिक होता है। बुद्ध और बुद्ध-श्रावकों द्वारा प्रशंसित होने के कारण भी कोई कोई पिंडपातिक होता है। अल्पेच्छता के ही कारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्‍ठ-जीवनबिताने की ही इच्छा के कारण, एकांत-जीवनप्रिय होने के ही कारण, इतने से ही संतुष्ट रहने के कारण भी कोई-कोई पिंडपातिक होता है।भिक्षुओ, ये पांच पिंडपातिक होते हैं।भिक्षुओ, इन पांच प्रकार के पिंडपातिको में जो अल्पेच्छता के ही कारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्‍ठ-जीवनबिताने की इच्छा की ही कारण, एकांत-जीवनप्रिय होने के ही कारण, इतने से ही संतुष्ट रहने के कारण, जो पिंडपातिक होता है, वही इन पांचों पिंडपातिकों में अग्र, श्रेष्‍ठ, प्रमुख, उत्तम और परं श्रेष्‍ठ कहलाता है।

भिक्षुओ, जैसे गौ से दूध होता है, दूध से दही, दही से नवनीत [मक्खन], नवनीत से घी, घी से घी-माण्ड [?]-घी-माण्ड ही, इन सबमें श्रेष्‍ठ कहलाता है। इसी प्रकारभिक्षुओ, इन पांच प्रकार के पिंडपातिकों में जो अल्पेच्छता के हीकारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्‍ठ-जीवनबिताने की इच्छा के ही कारण, एकांत-जीवनप्रिय होने के ही कारण, इतने से ही संतुष्ट रहने के ही कारण पिंडपातिक होता है, वह इन पांचों पिंड-पातिकों में अग्र, श्रेष्‍ठ, प्रमुख, उत्तम और परं श्रेष्‍ठ कहलाता है।

[५] //ब्राह्मण वर्ग/

१. सोणसुत्तं

१९१.भिक्षुओ, ये पांच बातें ऐसी हैं जो पहले ब्राह्मणों मेंदिखाई देती थीं, अब ब्राह्मणों में नहींदिखाई देतीं, अब कुत्तों मेंदिखाई देती हैं। कौन-सी पांच बातें?भिक्षुओ, पहले के ब्राह्मण केवल ब्राह्मणी से ही सहवास करते थे, अब्राह्मणी से नहीं।भिक्षुओ, अब के ब्राह्मण, ब्राह्मणी के पास भी जाते हैं, अब्राह्मणी के पास भी।भिक्षुओ, अब कुत्ते कुतिया के ही पास जाते हैं, अकुतिया के पास नहीं।भिक्षुओ, यह पहली बात है जो पहले के ब्राह्मणों मेंदिखाई देती थी, अब के ब्राह्मणों में नहींदिखाई देतीं, अब कुत्तों मेंदिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहले के ब्राह्मण रजस्वला के ही पास जाते थे, अरजस्वला के पास नहीं।भिक्षुओ, अब के ब्राह्मण रजस्वला के पास भी जाते हैं, अरजस्वला के पास भी।भिक्षुओ, अब कुत्ते रजस्वला कुतिया के ही पास जाते हैं, अरजस्वला कुतिया के पास नहीं।भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो पहले के ब्राह्मणों मेंदिखाई देती थी, अब के ब्राह्मणों में नहींदिखाई देती, अब कुत्तों मेंदिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहले के ब्राह्मण ब्राह्मणी का क्रय-विक्रय नहीं करते थे। जोप्रिया होती थी, उसी को सहवास करने केलिये अंगीकार करते थे।भिक्षुओ, अब के ब्राह्मण ब्राह्मणी का क्रय-विक्रय भी करते हैं, जोप्रिया होती है उसे भी सहवास केलिये अंगीकार करते हैं।भिक्षुओ, अब कुत्ते कुतिया का क्रय-विक्रय नहीं करते, जोप्रिया होती है उसे ही सहवास केलिये अंगीकार करते है।भिक्षु, यह तीसरी बात है जो पहले के ब्राह्मणो मेंदिखाई देती थी, अब के ब्राह्मणों में नहींदिखाई देती, अब कुत्तों मेंदिखीई देती है।

भिक्षुओ, पहले के ब्राह्मण धन-धान्य अथवा चांदी-सोने का संग्रह नहीं करते थे।भिक्षुओ, अब के ब्राह्मण धन-धान्य तथा चांदी-सोने का संग्रह करते हैं।भिक्षुओ, अब कुत्ते धन-धान्य अथवा चांदी-सोने का संग्रह नहीं करते।भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो पहले के ब्राह्मणों मेंदिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणों में नहींदिखाई देती, अब कुत्तों मेंदिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहले के ब्राह्मण संध्या के समय संध्या के भोजन केलिये, प्रातःकाल के समय प्राप्तःकाल के भोजन केलिये,भिक्षाटन करते थे।भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण पेट भर खाकर, बाकी बांध कर ले जाते हैं।भिक्षुओ, अब कुत्ते शाम के समय शाम का और प्रातःकाल के समय प्रातःकाल का भोजन खोजते हैं।भिक्षुओ, यह पांचवी बात है जो पहले के ब्राह्मणों मेंदिखाई देती थी, अब के ब्राह्मणों में नहींदिखाई देती, अब कुत्तों मेंदिखाई देती है।

२. दोणब्राह्मणसुत्तं

१९२. तब द्रोण ब्राह्मण जहां भगवान थे, वहां गया। पास जाकर भगवान बुद्ध से कुशल-क्षेम की बातचीत की। कुशलक्षेम पूछ चुकने के बाद वह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए द्रोण ब्राह्मण ने भगवान से यह कहा–

हे गौतम! हमने यह सुना हैकि आप ऐसे ब्राह्मणों का, जो बड़े-बूढ़े हों, वृद्ध हों, आयु-प्राप्त हों, न अभिवादन करते हैं, न उन को आसन देकर या बैठने केलिये कहकर उनका स्वागत ही करते हैं। तो क्या हे गौतम! यह ऐसा ही हैकि आप ऐसे ब्राह्मणों का, जो बढ़्-बूढ़े हों, वृद्ध हों, आयु-प्राप्त हों, न अभिवादन करते हैं, न उनको आसन देकर या बैठने केलिये कहकर उनका स्वागत ही करते हैं? हे गौतम! यह तो आपकेलिये उचित नहीं है। “हे द्रोण! तू भी अपने आप को ब्राह्मण कहता है?” “हे गौतम! यदि ठीक ठीक कहने वाला कोईकिसी के बारे में कहेकि यह ब्राह्मण है; यह माता तथापिता दोनों ही की ओर से सुजात है; इसकी सात पीढ़ी तक की वंश-परंपरा शुद्ध है; यह जातिवाद की दृष्टि सेनिर्दोष है, यह अध्यापक है; यह [वेद-] मंत्र धारी है, यह तीनों-वेदों में पारंगत है,निघण्टु, केटुभयुक्त, अक्षर-प्रभेद युक्त, संख्या केहिसाब से पांचवे इतिहास-युक्त; यह [वेद का] पद-पाठ करने वाला है; यह व्याकरण का जानकार है, यह लोकायत-महापुरुष लक्षणों का पूरा जानकार है; तो वह मेरे ही बारे में ठीक ठीक कहेगा। “हे गौतम! मैं ही वह ब्राह्मण हूं, जो मातापिता दोनों की ओर से सुजात है;जिसकी सात पीढ़ी तक की वंश-परंपरा शुद्ध है; जो जातिवाद की दृष्टि सेनिर्दोष है, जो अध्यापक है; जो [वेद-] मंत्रधारी है; जो तीनों वेदों में पारंगत है,निघण्टु- केटुभ-युक्त, अक्षर-प्रभेद-युक्त, संख्या केहिसाब से पांचवे इतिहास युक्त; जो [= वेदका] पद-पाठ करने वाला है; जो व्याकरण का जानकार है; जो लोकायत महापुरुष-लक्षणों का पूरा जानकार है।”

“हे द्रोण! जो तुम्हारे पूर्वज ब्राह्मणों के ऋषी-गण हुए हैं, जो मंत्रों की रचना करने वाले थे, मंत्रों के प्रवक्ता थे,जिनके द्वारा संग्रहीत पुराने मंत्रों का आज के ब्राह्मण अनुगायन करते हैं, अनुभाषण करते हैं, परंपरानुसारशिक्षण करते हैं, अनुवाचन करते हैं– जैसे अट्टक, वामक, वामदेव,विश्वामित्र, जम्दग्नि, अंगीरस, भारद्वाज वसिष्‍ठ, काश्यप, भृगु,– वे पांच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ण करते हैं– ब्रह्म-समान, देव-समान, मर्यादायुक्त, मर्यादा-रहित तथा पांचवा चाण्डाल-ब्राह्मण। हे द्रोण! तू उनमें से कौन [= कौन-सा] ब्राह्मण है?”

“हे गौतम! मैं इन पांच प्रकार के ब्राह्मणों को नहीं जानता। मैं केवल ‘ब्राह्मण’ को ही जानता हूं। अच्छा हो हे गौतम! आप मुझे इस प्रकार का उपदेश देंकि मैं इन पांच प्रकार के ब्राह्मणों को जान लूं।” “तो ब्राह्मण! सुन। अच्छी तरह से मन में धारण कर। मैं कहता हूं।” “बहुत अच्छा” कहकर द्रोण ब्राह्मण ने भगवान को प्रतिवचनदिया। भगवान ने यह कहा–

“द्रोण! ब्राह्मण ब्रह्म-समान कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनों की ओर से सुजात होता है, उसकी सात पीढ़ी तक की वंश-परंपरा शुद्ध होती है, जातिवाद की दृष्टि सेनिर्दोष होता हे। वह [वेद-] मंत्रों का अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्स तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हे। अड़तालीस वर्ष तक कुसार-ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए [वेद-] मंत्रों का अध्ययन कर अधर्मानुसार नहीं, किंतु धर्मानुसार आचार्य केलिये गुरु-दक्षिणा [= आचार्य-धन] खोजता है।

द्रोण! इसविषय में धर्म-विधि क्या है? न कृषि कर के, नव्योपार कर के, न गोपालन से, न धनुर्विद्या से, न राजकीय नौकरी से और नकिसी दूसरेशिल्प से। वहभिक्षा के ठूठे को घृणा की दृष्टि से न देख, केवलभिक्षाटन द्वारा आचार्य-धन खोजता है। वह आचार्य को उसकी गुरु-दक्षिणा भेंटकर, बाल-दाढ़ी मुण्डा, काषाय वस्त्र पहन, घर से बेघर हो प्रव्रजित हो जाता है। वह प्रव्रजित हो जाने पर एकदिशा, दूसरीदिशा, तीसरीदिखा तथा चौथीदिशा को मैत्री-युक्तचित्त से व्याप्त करविचरता है। वह ऊपर, नीचे,तिर्यक सभीदिशाओं में सर्वत्र, सब केलिये, समस्त लोक को मैत्री-युक्त,विपुल, अप्रमाण, वैर-रहित, क्रोध-रहितचित्त सेविचरता है। वह करुणा युक्तचित्त से मुदिता-युक्तचित्त से, उपेक्षा-युक्तचित्त से एकदिशा, दूसरीदिशा, तीसरीदिशा तथा चौथीदिशा को व्याप्त करविचरता है। वह ऊपर, नीचे,तिर्यक सभीदिशाओं में, सर्वत्र, सब केलिये, समस्त लोक को उपेक्षा-युक्त,विपुरुले, अप्रमाण, वैर-रहित, क्रोध-रहितचित्त सेविचरता है। वह इन चारों ब्रह्म-विहारों का अभ्यास कर शरीर के न रहने पर, मरने के अनन्तर सुगति ब्रह्म-लोक में उत्पन्‍न होता हे। द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण ब्रह्म-समान होता है।

द्रोण! ब्राह्मण देव-समान कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनों की ओर से सुजात होता है, उसकी सात पीढ़ी तक की वंश-परंपरा शुद्ध होती है, जातिवाद की दृष्टि सेनिर्दोष होता है। वह [वेद-] मंत्रों का अध्यण करता हुआ, अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए [वेद-] मंत्रों का अध्ययन कर अधर्मानुसार नहीं, किंतु धर्मानुसार आचार्य केलिये गुरु-दक्षिणा [= आचार्य-धन] खोजता है।

इनविषय में धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालन से, न धनुर्विद्या से, न राजकीय नौकरी से और नकिसी दूसरेशिल्प से। वहभिक्षा के ठूठे को घृणा की दृष्टि से न देख, केवलभिक्षाटन द्वारा आचार्य धन खोजता है। वह आचार्य को उसकी दक्षिणा भेंट कर अधर्मानुसार नहीं, धर्मानुसार ही, भार्या की खोज करता है। इसविषय में धर्म-विधि क्या है? वह क्रय-विक्रय द्वारा उसे प्राप्त नहीं करता है। उसकी ब्राह्मणी केवल उसके हाथ पर जल डालकर उसके माता-पिता द्वारा उसे दी गई होती है। वह केवल ब्राह्मणी से ही सहवास करता है, क्षत्राणी से नहीं, वैश्य-स्त्री से नहीं, शूद्र-स्त्री से नहीं, चंडाल-स्त्री से नहीं,निषाद-स्त्री से नहीं, बांसफोड स्त्री से नहीं, भंगिन से नहीं तथा पुक्‍कुस-स्त्री से नहीं। वह गर्भिणी से सहवास नहीं करता, दूधपिलाती स्त्री से नहीं, अरजस्वला से नहीं। द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणी से क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण गर्भिणी से सहवास करता है तो वह तरुण वा तरुणी गूंह में बहुत लथ-पथ जैसी हो जाती हैं। इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणी से सहवास नहीं करता। द्रोण! वह ब्राह्मण दूधपिलाती हुई से क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण दूधपिलाती हुई से सहवास करे तो वह तरुण या तरुणी अशुचि पापी-सी होती है। इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण दूधपिलाती हुई से सहवास नहीं करता! द्रोण! वह ब्राह्मण अरजस्वला से क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण अरजस्वला से सहवास करता है, तो वह ब्राह्मणी न उसकी कामेच्छा की तृप्ति केलिये होती है, न क्रीड़ा केलिये होती है, न रति केलिये होती है; वह ब्राह्मणी उस ब्राह्मण केलिये केवल जनन करने वाली होती है। वह बालक या बालिका को जन्म दे, बाल-दाढ़ी मुंडा, काषाय-वस्त्र पहन, घर से बेघर हो, प्रव्रजित हो जाता है। इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह काम-भोगों से पृथक हो.....चतुर्थ ध्यान को प्राप्त करविचरता है। वह इन चारों ध्यानों का अभ्यास कर, शरीर के छूटने पर, मरने के अनन्तर सुगति, स्वर्ग लोक में जन्म ग्रहण करता है। द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण देव-समान होता है।

द्रोण! ब्राह्मण मर्यादा का पालन करने वाला कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनों की ओर से सुजात होता है, उसकी सात पीढ़ी तक की वंश-परंपरा शुद्ध होती है, जातिवाद की दृष्टि सेनिर्दोष होता है। वह [वेद-] मंत्रों का अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए [वेद-] मंत्रों का अध्ययन कर अधर्मानुसार नहीं, किंतु धर्मानुसार आचार्य केलिये गुरु-दक्षिणा [= आचार्य-धन] खोजता है।

इसविषय में धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार कर के, न गोपालन से, न धुर्विद्या से, न राजकीय नौकरी से और नकिसी दूसरेशिल्प से। वहभिक्षा के ठूठे को घृणा की दृष्टि से न देख, केवलभिक्षाटन द्वारा आचार्य धन खोजता है। वह आचार्य को उसकी दक्षिणा भेंट कर अधर्मानुसार नहीं, धर्मानुसार ही भार्या की खोज करता है। इसविषय में धर्म-विधि क्या है? वह क्रय-विक्रय द्वारा उसे प्राप्त नहीं करता है। उसकी ब्राह्मणी केवल उसके हाथ पर जल डालकर ब्राह्मणी के माता-पिता द्वारा उसे दी गई होती है। वह केवल ब्राह्मणी से ही सहवास करता है, क्षत्राणी से नहीं, वैश्य-स्त्री से नहीं, शूद्र-स्त्री से नहीं, चण्डाल-स्त्री से नहीं,निषाद-स्त्री से नहीं, बांसफोड़-स्त्री से नहीं, भंगिन से नहीं तथा पुक्‍कुस-स्त्री से नहीं। वह गर्भिणी से सहवास नहीं करता, दूधपिलाती स्त्री से नहीं, अरजस्वला से नहीं। द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणी स्त्री से क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण गर्भिणी स्त्री से सहवास करे..... केवल जनन करने वाली होती है। वह पुत्र या पुत्री को जन्म दे, उस संतान-सुख का ही आनंद लेते हुए गृहस्थी करता है। वह घर छोड़ बे-घर नहीं होता। वह पुराने ब्राह्मणों की मर्यादा का पालन करता है। उसका अतिक्रमण नहीं करता। क्योंकि वह ब्राह्मण जो पुराने ब्राह्मणों की मर्यादा का पालन करता है, उसका अतिक्रमण नहीं करता, इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण मर्यादा-युक्त रहता है। हे द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण मर्यादा-युक्त होता है।

द्रोण! ब्राह्मण मर्यादा का उल्‍लंघन करने वाला कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण मातापिता दोनों की ओर से सुजात होता है.....जाति-वाद की दृष्टि सेनिर्दोष होता है। वह [वेद-] मंत्रों का अध्ययन करता हुआ अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए [वेद-] मंत्रों का अध्ययन कर, अधर्मानुसार नहीं, किंतु धर्मानुसार आचार्य केलिये गुरु-दक्षिणा [= आचार्य धन] खोजता है।

इसविषय में धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालन से, न धनुर्विद्या से, न राजकीय नौकरी से और नकिसी दूसरेशिल्प से। वहभिक्षा के ठूठे को घृणा की दृष्टि से न देख, केवलभिक्षाटन द्वारा आचार्य-धन खोजता है। वह आचार्य को उसकी दक्षिणा साैंपकर धर्मानुसार भी, अधर्मानुसार भी, क्रय-विक्रय द्वारा भी, और हाथ पर पानी डालकर भी दी गई ब्राह्मणी को प्राप्त करता है। वह ब्राह्मणी से भी सहवास करता है, क्षत्राणी से भी, वैश्य-स्त्री से भी, शूद्र-स्त्री से भी, चंडाल-स्त्री से भी,निषाद-स्त्री से भी, बांस-फोड़-स्त्री से भी, भंगिन से भी तथा पक्‍कुस-स्त्री से भी। वह गर्भिणी से भी सहवास कराता है, दूध पीलाती हुई से भी सहवास करता है, रजस्वला से भी सहवास करता है तथा अरजस्वला से भी सहवास करता है। उसकी ब्राह्मणी उसकी कामेच्छा की तृप्ति केलिये भी होती है, क्रीड़ा केलिये भी होती है, रति केलिये भी होती है तथा जनन करने वाली भी होती है। वह पुराने ब्राह्मणों की मर्यादा का पालन नहीं करता, उस का अतिक्रमण करता है। क्योंकि जो पुराने ब्राह्मणों की मर्यादा होती है, वह उसका पालन नहीं करता, वह उसका अतिक्रमण करता है, इसलिये द्रोण! वह ब्राह्मण मर्यादा का उल्‍लंघन करने वाला होता है।

द्रोण! ब्राह्मण चंडाल-ब्राह्मण कै से होता है? द्रोण! ब्राह्मण मातापिता दोनों की ओर से सुजात होता है, उसकी सात-पीढ़ी तक की वंश-परंपरा शुद्ध होती है, जाति-वाद की दृष्टि सेनिर्दोष होता है। वह [वेद-] मंत्रों का अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्स तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए [वेद-] मंत्रों का अध्ययन कर धर्मानुसार वा अधर्मानुसार आचार्य-धन खोजता है। वह कृषि करके, व्योपार करके, गोपालन से, धनुर्विद्या से, राजकीय-नौकरी से तथाकिसी दूसरेशिल्प से भी। वहभिक्षा के ठूठे तक को घृणा की दृष्टि से नहीं देखता।

वह आचार्य को गुरु-दक्षिणा भेंट कर धर्मानुसार या अधर्मानुसार भार्या की खोज करता है। वह क्रय-विक्रय द्वारा भी खोजता है। वह ब्राह्मणी के मातापिता द्वारा उसके हाथ पर जल डालकर दी गई ब्राह्मणी को भी प्राप्त करता है। वह ब्राह्मणी से भी सहवास करता है, क्षत्राणी से भी सहवास करता है, वैश्य-स्त्री से भी, शूद्र-स्त्री से भी, चण्डाल-स्त्री से भी, भंगिन-स्त्री से भी तथा पक्‍कुस-स्त्री से भी। वह गर्भिणी से भी सहवास करता है, दूधपिलाती हुई से भी सहवास करता है, रजस्वला से भी सहवास करता है तथा अरजस्वला से भी! उसकी ब्राह्मण उसकी कामेच्छा की पूर्ति केलिये भी होती है, क्रीड़ा केलिये भी होती है, रति केलिये भी होती है तथा जनन करने वाली भी होती है। वह सभी तरह के काम करके जीवि का चलाता है। उससे ब्राह्मण पूछते हैं– ‘आप अपने आप को ब्राह्मण कहते हुए क्यों सभी तरह के काम करके जीविका चलाते हैं?’ वह उत्तर देता है– “जैसे आग शुचि अशुचि दोनों को जला डालती है, वह स्वयंलिप्त नहीं होती। इसी प्रकार यदि ब्राह्मण सभी तरह के काम कर के भी जीविका चलाता है, तो भी वह उससेलिप्त नहीं होता। द्रोण! क्योंकि वह सभी तरह के काम कर के जीविका चलाता है, इसलिये वह चंडाल-ब्राह्मण कहलाता है! द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण चंडाल-ब्राह्मण होता है।

हे द्रोण! जो तुम्हारे पूर्वज ब्राह्मणों के ऋषीगण हुए हैं, जो मंत्रों की रचना करने वाले थे, मंत्रों के प्रवक्ता था,जिनके द्वारा संग्रहीत पुराने मंत्रों का आज के ब्राह्मण अनुगायन करते हैं, अनुभाषण करते हैं, परंपरानुसारशिक्षण करते हैं, अनुवाचन करते हैं– जैसे अट्टक, वामक, वामदेव,विश्वामित्र, जम्दग्नि, अङ्गीरस, भारद्वाज, वसिष्‍ठ, काश्यप, भृगु– वे ही इन पांच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्णन करते हैं– ब्रह्म-समान, देव-समान, मर्यादा-युक्त, मर्यादा-रहित तथा पांचवां चंडाल-ब्राह्मण। हे द्रोण! तू उनमें से कौन-सा ब्राह्मण है?

“हे गौतम! यदि ऐसा है तो हम चंडाल-ब्राह्मण कीगिनती में भी नहीं हैं। हे गौतम! आपका कथन बहुत सुंदर है.....हे गौतम! आज से प्राण रहने तक आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।”

३. सङ्गारवसुत्तं

१९३. उस समय संगारव ब्राह्मण जहां भगवान थे, वहां पहुंचा। पास जाकर भगवान से कुशल-क्षेम संबंधी बातचीत की। कुशल-क्षेम की बातचीत समाप्त होने पर वह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए संगारव ब्राह्मण ने भगवान से यह पूछा– हे गौतम! इसका क्या हेतु है, क्या कारण हैकिकिसी समयचिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या? इसका क्या हेतु है, क्या कारण हैकिकिसी समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद रहते हैं,चिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या?”

ब्राह्मण!जिस समयचित्त में काम-राग व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न काम-राग के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है, उस समय पर-हित भी यथार्थ रूप से न ज्ञान रहता है, नदिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से नदिखाई देता है, न ज्ञान रहता है। उस समयचिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, उसमें लाख का रंग, हल्दी का रंग, नीला-रंग वा मंजीठ का रंग पड़ा हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट न हो,दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में काम-राग व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न काम-राग के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हितभी यर्थार्थ रूप से नदिखाई देता है, न ज्ञात रहता है; उस समय पर-हित भी यथार्थ रूप से नदिखाई देता है, न ज्ञात रहता है। उस समयचिर-काल तक पाठकिये गये [वेद] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में व्यापदि [= क्रोध] व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न व्यापाद के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, वह आग पर रखा हो, गर्म हो, उबल रहा हो, उफन रहा हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी आपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट न हो,दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में व्यापाद [= क्रोध] व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न व्यापाद के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ-रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है; उस समय पर-हित भी..... उस समय आत्म-हित तथा पर-हित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है। उस समयचिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में थीन-मिद्ध [= आलस्य-तन्द्रा’ व्याप्त रहता है, और उत्पन्‍न आलस्य तथा तंद्रा के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है। उस समयचिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये वेद-मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी का बर्तन हो, उसके ऊपर कोई-कीचड़ हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट न हो,दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में थीन-मिद्ध व्याप्त रहता है, और उत्पन्‍न थीन-मिद्ध के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....पर-हित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता हे। उस समयचिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में उद्धतपन तथा कौकृत्य [= पश्चाताप] व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न उद्धतपन तथा कौखृत्य के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता हे। उस समयचिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी का बर्तन हो, वह हवा से चंचल हो,हिलता-डोलता हो, उसमें लहरें उठ रही हों, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट न हो,दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में उद्धतपन तथा कौकृत्य व्यापा रहता और उत्पन्‍न उद्धतपन तथा कौखृत्य के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है। उस समयचिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में संदेह [=विचिकित्सा] व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न संदेह के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है। उस समयचिर-काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी का बर्तन हो, अस्थिर हो,हिलता हो, तलपर ही कीचड़ युक्त हो, अंधेरे में रखा हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट न हो,दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में संदेह [=विचिचिकित्सा] व्याप्त रहता है और उत्पन्‍न संदेह के शमन का यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहिति भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से न ज्ञात रहता है, नदिखाई देता है। उस समयचिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्र भी भूल जाते हैं, न पाठकिये गये मंत्रों का तो कहना ही क्या?

किंतु हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में काम-राग व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न काम-राग के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है, उस मय परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिर काल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं,चिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, उसमें न लाख का रंग हो, न हल्दी का रंग हो, न नीला रंग हो, न मंजीठा रंग हो; उस बर्तन में कोई आंख वाला अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट हो,दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में काम-राग व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न काम-राग के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है, पर-हित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता हे। उस समयचिर काल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं,चिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में क्रोध [= व्यापाद] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न व्यापाद के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी.....परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं।चिर काल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या! हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, वह नाग पर रखा हो, न गर्म हो, न उबल रहा हो, न उफान आ रहा हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट हो,दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में क्रोध [= व्यापाद] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न व्यापाद के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी......परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं,चिरकाल तक पाठकिये गये वेद-मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में थीन-मिद्ध [= आलस्य तन्द्रा] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न थीन-मिद्ध के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता हे। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये वेद [= मंत्र] भी याद आ जाते हैं।चिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी का बर्तन हो, उसके ऊपर कोई कीचड़ न हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी आपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट हो,दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में थीन-मिद्ध व्याप्त नहीं रहता है और उत्पद्धन्‍न थीन-मिद्ध के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिर काल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं।चिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में उद्धतपन तथा कौकृत्य [= पश्चाताप] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न उद्धतपन तथा कौकृत्य के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं।चिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी का बर्तन हो, वह हवा से चंचल न हो,हिलता-डोलता न हो, उसमें लहरें न उठ रही हों, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट हो,दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में उद्धतपन तथा कौकृत्य [= पश्चात्ताप] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न उद्धतपन तथा कौकृत्य के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी.....परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं।चिरकाल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण!जिस समयचित्त में संदेह [=विचिकित्सा] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न संदेह के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी.....परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैं,चिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी का बर्तन हो, अस्थिर न हो,हिलता न हो, तल पर ही कीचड़ युक्त न हो, अंधेरे में रखा न हो, उस बर्तन में कोई आंख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहां प्रकट हो,दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण!जिसचित्त में संदेह [=विचिकित्सा] व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्‍न संदेह के शमन का यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी.....परहित भी.....आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूप से ज्ञात रहता है,दिखाई देता है। उस समयचिरकाल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद आ जाते हैंचिरकाल तक पाठकिये गये [वेद] मंत्रों का तो कहना ही क्या?

हे ब्राह्मण! यही हेतु है, यही कारण हैकि कसी समयचिर काल तक पाठ नकिये गये [वेद-] मंत्र भी याद रहते हैं,चिर काल तक पाठकिये गये [वेद-] मंत्रों का तो कहना ही क्या?

“हे गौतम! आपका कहना बहुत ही सुंदर है.....हे गौतम! आज से प्राण रहने तक आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।”

४. कारणपालीसुत्तं

१९४. एक समय भगवान वैशाली के महावन में कूटागार शाला मेंविहार करते थे। उस समय कारण पाली नाम का ब्राह्मणलिच्छवियों का काम काज देखता था। कारण पाली ब्राह्मणने देखाकिपिगिंयानि ब्राह्मण दूर से चला आ रहा है। उसे, आता देख, पिंगियानि ब्राह्मण से वह बोला–

पिंगियानि! आप मध्याह्न के समय कहां से आ रहे हैं?” “मैं श्रमण गौतम के पास से चला आ रहा हूं।”

“पिंगियानि! तुम श्रमण गौतम की प्रज्ञा-सामर्थ के बारे में क्या समझते हो? क्या तुम उसे पंडित मानते हो।” “कहां मैं और कहां श्रमण गौतम! मैं कौन हूं जो श्रमण गौतम की प्रज्ञा-सामर्थ्य जानूँगा। श्रमण गौतम की प्रज्ञा सामर्थ्य का जानने वाला भी वैसी ही प्रज्ञा-सामर्थ्य वाला होना चाहिये।” “पिंगियानि! तुम श्रमण गौतम की बहुत उदार प्रशंसा कर रहे हो।” “श्रमण गौतम पहले ही अत्यंत प्रशंसित है। वह देवताओं तथा मनुष्यों से में श्रेष्‍ठ है।” “पिंगियानि!किस बात को लेकर तुम श्रमण गौतम के प्रति इतने श्रद्धावान हो?”

“हे पुरुष! जैसे श्रेष्‍ठ-रस से तृप्त हुआ, दूसरे हीन रसों की इच्छा नहीं करता। इसी प्रकार जहां जहां से भी– चाहे सूत्र को लेकर, चाहे गेय्य को लेकर चाहे वेय्याकरण को लेकर और चाहे अद्भुत धर्म को लेकर– उस श्रमण गौतम की धर्म देशना सुनने कोमिलती है,फिर उस उसविषय में बहुत से श्रमण-ब्राह्मणों के मत सुनने की इच्छा नहीं होती।

हे पुरुष! जैसे कोई भूख से दुबलाया हुआ आदमी मधु-पिंड पा ले। वह उसे जहां जहां से भी चखे उसे वह स्वादिष्ट ही स्वादिष्ट लगे। इसी प्रकार जहां जहां से भी– चाहे सूत्र को लेकर, चाहे गेय्य को लेकर, चाहे वेय्याकरण को लेकर और चाहे अद्भुत-धर्म को लेकर-उस श्रमण गौतम की धर्म-देशना सुनने कोमिलती है, वह संतोष-प्राप्ति का कारण होती ही है, वह आनन्द-प्राप्ति का कारण होती ही है।

हे पुरुष! जैसेकिसी को चंदन की लकड़ीमिले– चाहे हरे चंदन की हो और चाहे लाल चंदन की हो– उसे वह चाहे जड़ सेघिसे, चाहे बीच सेघिरे और चाहेसिरे पर सेघिसे, उसमें से संतोष-प्रद सुगंधि हीनिकलती है। इसीप्रकार जहां जहां से भी– चाहे सूत्र को लेकर, चाहे गेय्य को लेकर, चाहे वेय्याकरण को लेकर और चाहे अद्भुत-धर्म को लेकर– उस श्रमण गौतम की धर्म-देशना सुनने कोमिलती है, वह संतोष-प्राप्ति का कारण होती ही है, वह आनन्द-प्राप्ति का कारण होती ही है।

हे पुरुष! जैसे कोई आदमी अत्यंत रोगी हो, दुखी हो, पीड़ित हो। कोई कुशलचिकित्सक उसके रोग को मूलतः नष्ट कर दे। इसी प्रकार जहां जहां से भी– चाहे सूत्र को लेकर, चाहे गेय्य को लेकर, चाहे वेय्याकरण को लेकर और चाहे अद्भुत धर्म को लेकर– उस श्रमण गौतम की धर्म-देशना सुनने कोमिलती है, उससे शोक, रोना-पीटना, दुःख, दौर्मनस्य, पश्चाताप अंतर्धान होते ही हैं।

हे पुरुष! जैसे कोई पुष्करिणी हो, अच्छे जल वाली, अनुकूल जल वाली, शीतल जल वाली, स्वच्छ सुतीर्थ वाली तथा रमणीय। तब कोई आदमी आये ग्रीष्म से अभितप्त, ग्रीष्म सेघिरा हुआ, क्‍लान्त, थका हुआ, प्यासा, वह उस तालाब में उतरकर, नहाकर, पानी पीकर सारे दर्द-क्‍लेश तथा जलन को शांत कर ले। इसी प्रकार जहां जहां से भी– चाहे सूत्र को लेकर, चाहे गेय्य को लेकर, चाहे वेय्याकरण को लेकर और चाहे अद्भुत-धर्म को लेकर– उस श्रमण गौतम की धर्म-देशना सुनने कोमिलती है, उससे सभी शोक, रोना-पीटना, दुःख, दौर्मनस्य, पश्चात्ताप शांत होते ही हैं।

ऐसा कहने पर कारण पाली ब्राह्मण आसन से उठा और उत्तरीय को अपने दाहिने कंधे पर रख, अपना दाहिनी घुटना पृथ्वी पर गड़ा, भगवावान की ओर हाथ जोड़, तीन बार प्रीति-वाक्य कहा–

उन भगवान अर्हत सम्यक संबुद्ध को नमस्कार है, उन भगवान अर्हत सम्यक संबुद्ध को नमस्कार है, उन भगवान अर्हत सम्यक-सम्मुद्ध को नमस्कार है।

हे पिंगियानि! यह बहुत सुंदर है। हे पिंगियानि! यह बहुत सुंदर है। पिंगियानि! जैसे कोई औंधे को सीधा कर दे, ढके को उघाड़ दे, अथवा मूढ़ को मार्ग बता दे, अथवा आंख वालों के देखने केलिये तेल-प्रदीप की व्यवस्था करे! हे पिंगियानि! तुमने अनेक प्रकार से धर्म का प्रकाशनकिया। हे पिंगियानि। मैं उन भगवान गौतम की शरण जाता हूं, धर्म की तथाभिक्षु संघकी। पिंगियानि! आज से प्राण रहने तक आप मुझे शरणागत उपासक समझें।

५. पिङ्गियानीसुत्तं

१९५. एक समय भगवान वैशाली के महावान में कूटागार शाला मेंविहार करते थे। उस समय पांच सौलिच्छवी भगवान का सत्संग करते थे। उनमें से कुछलिच्छवी नीले थे, नील-वर्ण, नील-वस्त्र तथा नीले-अलंकारों वाले। उनमें से कुछलिच्‍चवी पीले थे, पीत-वर्ण, पीत-वस्त्र तथा पीले अलंकारों वाले। उनमें से कुछलिच्छवी लाल थे, रक्त-वर्ण, रक्त-वस्त्र तथा लाल अलंकारों वाले। उनमें से कुछलिच्छवी सफैद थे, श्वेत-वर्ण, श्वेत-वस्त्र तथा सफैद अलंकारों वाले। भगवान वर्ण और यश में उनलिच्छिवियों से भी बढ़कर थे।

तब पिंगियानी ब्राह्मण अपने उत्तरीय को अपने एक कंधे पर कर, भगवान को अंजलि-बद्ध नमस्कार कर, भगवान से बोला– “भगवान! मुझे [काव्य] सूझ रहा है, सुगत! मुझे काव्य सूझ रहा है।” भगवान ने कहा– पिंगियानी! तुझे [काव्य] सूझे। तब पिंगियानि ब्राह्मणने भगवान के सम्मुख ही योग्य गाथोओं से उनकी स्तुति की–

पदुमं यथा कोकनदं सुगंधं

पातोसिया फुल्‍लमवीतगंधं

अंगीरसं पस्सविरोचमानं

तपंतमादिच्‍चमिवंतलिक्खे॥

[जिस प्रकार प्रातःकाल सुगंधि-युक्त कोकनद कमल पुष्पित होता है, उसी के समान अंगीरस-गोत्र वाले तथागत को देखो– जो आकाश में चमकते हुए सूर्य के समान प्रकाशमान है।]

तब उनलिच्छवियों ने पिंगियानि ब्राह्मण को पांच सौ उत्तरीय [दुशाले] ओढ़ादिये। पिंगियानी ब्राह्मण ने वे पांच सो दुशाले भगवान को समर्पित करदिये।

तब भगवान ने उनलिच्छिवियों से यह कहा–लिच्छवियो! दुनिया में पांच रत्नों का प्रादुर्भाव कठिन है। कौन-से पांच रत्नोंका? दुनिया में तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध का प्रादुर्भाव कठिन है। दुनिया में तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय का उपदेश करने वाले का प्रादुर्भाव कठिन है। दुनिया में तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय का उपदेश होने पर उसके समझने वाले का प्रादुर्भाव कठिन है।दिनिया में तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म का उपदेश होने पर उसे समझकर तदनुसार आचरण करने वाले का प्रादुर्भाव कठिन है। दुनिया में कृतज्ञ, कृत-उपकार को जानने वाले आदमी का प्रादुर्भाव कठिन है।लिच्‍चवियो! दुनिया में इट पांच रत्नों का प्रादुर्भाव कठिन है।

६. महासुपिनसुत्तं

१९६.भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी बोधि प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने पांच महावान स्वप्न देखे। कौन-से पांच?भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय [देखे स्वप्न में] यह महापृथ्वी उनकी महान शैया बनी हुई थी, पर्वतराजहिमालय उनका तकिया था, पूर्वीय समुद्र बायें हाथ से ढंका था, पश्चिमीय समुद्र दाहिने हाथ से ढंका था, दक्षिण समुद्र दोनों पांवों से ढंका था।भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्धने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने यह पहला महावान स्वप्न देखा था।

फिरभिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्धने बुद्धत्व लाभ नहींकिया,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय उनकी नाभी सेतिरिया नामकतिनकों ने उगकर आकाश को जा छुआ था।भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्ति नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने यह दूसरा महावान स्वप्न देखा था।

फिरभिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय कुछ कालेसिर तथा श्वेत रंग के जीव पांव से ऊपर की ओर बढ़ते-बढ़ते घुटनों तक ढककर खड़े हो गये थे।भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने यह तीसरा महावान स्वप्न देखा था।

फिरभिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय नाना वर्ण के चार पक्षी चारोंदिशाओं से आये और उनके चरणों मेंगिरकर सभी सफेद वर्ण के हो गये।भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्ति नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने यह चौथा स्वप्न देखा था।

फिरभिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोद्धि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय गूथ-पर्वत पर ऊपर-ऊपर चलते थे, चलते समय उससे सर्वथा अलिप्त रहते थे।भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी बोधि सत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने यह पांचवां स्वप्न देखा था।

भिक्षुओ, यह जोजिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोद्धि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय यह महा-पृथ्वी उनकी महावान शैया बनी हुई थी, पर्वतराजहिमालय उनका तकिया था, पूर्वीय समुद्र बायें हाथ से ढंका था, पश्चिमीय समुद्र दायें हाथ से ढँका था, दक्षिण समुद्र दोनों पांव से ढँका था।भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने अनु पर सम्यक संबोधि को प्राप्तकिया, उसी को प्रकट करने वाला यह पहला महावान स्वप्नदिखाईदिया था।

भिक्षुओ, यह जोजिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय उनकी नाभी सेतिरिया नामकतिनकों ने उगकर आकाश को जा छुआ था।भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने आर्य अष्टांगिक मार्ग का ज्ञान प्राप्त कर, उसे देव-मनुष्यों तक प्रकाशितकिया। उसी को प्रकट करने वाला यह दूसरा महावान स्वप्नदिखाईदिया था।

भिक्षुओ, यह जोजिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने ‘बुद्धत्व’ लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व’ ही थे, उस समय कुछ कालेसिर तथा श्वेत रंग के जीव पांव से ऊपर की ओर बढ़ते बढ़ते घुटनों तक ढककर खड़े हो गये थे।भिक्षुओ, बहुत से श्वेत वस्त्र धारी गृहस्थी प्राणांत होने तक तथागत के शरणागत हुए। उसी को प्रकट करने वाला यह तीसरा महावान स्वप्नदिखाईदिया था।

भिक्षुओ, यह जोजिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने ‘बुद्धत्व’ लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधिसत्व ही थे, उस समय नाना वर्ण के चार पक्षी चारोंदिशोओं से आये और उनके चरणों मेंगिरकर सभी सफेद वर्ण के हो गये।भिक्षुओ, क्षत्रिय, ब्राह्मण वैश्य तथा शूद्र– ये चारों वर्ण हैं। वे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय के अनुसार घर से बे-घर हो प्रव्रजित हो, अनुपमविमुक्ति को साक्षात करते हैं। इसी को प्रकट करने वाला यह चौथा महावान स्वप्नदिखाईदिया था।

भिक्षुओ, यह जोजिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने ‘बुद्धत्व’ लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय गूथ-पर्वत पर ऊपर ऊपर चलते थे, चलते समय उससे सर्वथा अलिप्त रहते थे।भिक्षुओ, तथागत चीवर,भिक्षा, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय, भैषज्य-परिष्कारों को प्राप्त करने वाले हैं। तथागत इन के प्रति अनासक्त, अमूर्छित, रहते हैं। वे इनमेंबिना उलझे हुए, इन के दुष्परिणाम को देखते हुए, मुक्त-प्रज्ञ हो इनका उपभोग करते हैं। इसी को प्रकट करने वाला यह महान स्वप्नदिखाईदिया था।

भिक्षुओ,जिस समय तथागत अर्हत सम्यक संबुद्ध ने बुद्धत्व लाभ नहींकिया था,जिस समय अभी ‘बोधि’ प्राप्त नहीं की थी,जिस समय अभी ‘बोधि-सत्व’ ही थे, उस समय उन्होंने पांच महावान स्वप्न देखे।

७. वस्ससुत्तं

१९७.भिक्षुओ, वर्षा होने में ये पांच बाधायें आ उपस्थित होती हैं,जिन्हें ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषियों की आंख नहीं पहुंचती। कौन-सी पांच?भिक्षुओ, ऊपर आकश में अग्नि [= तेज] धातु प्रकुपित हो जाती है, उससे उत्पन्‍न मेघ लौट जाते हैं।भिक्षुओ, वर्षा होने में यह पहली बाधा आ उपस्थित होती है,जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषिओं की आंख नहीं पहुंचती।

फिरभिक्षुओ, ऊपर आकाश में वायु धातु प्रकुपित हो जाती है। उससे उत्पन्‍न मेघ लौट जाते हैं।भिक्षुओ, वर्षा होनेमं यह दूसरी बाधा आ उपस्थित होती है,जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषियों की आंख नहीं पहुंचती।

फिरभिक्षुओ, असुरेन्द्र राहु हाथ से पानी लेकर महासमुद्र में छोड़ देता है।भिक्षुओ, वर्षा होने में यह तीसरी बाधा आ उपस्थित होती है,जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषियों की आंख नहीं पहुंचती।

फिरभिक्षुओ, वर्षा-बादल देव प्रमादी हो जाते हैं।भिक्षुओ, वर्षा होने में यह चौथी बाधा आ उपस्थित होती है,जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषियों की आंख नहीं पहुंचती।

फिरभिक्षुओ, आदमी अधार्मिक हो जाते हैं।भिक्षुओ, वर्षा होने में यह पांचवीं बाधा आ उपस्थिति होती हैं,जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषियों की आंख नहीं पहुंचती।भिक्षुओ, वर्षा होने में ये पांच बाधायें आ उपस्थित होती हैं,जिन्हें ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहां तक ज्योतिषियों की आंख नहीं पहुंचती।

८. वाचासुत्तं

१९८.भिक्षुओ,जिस वाणी में ये पांच बातें होती हैं, वह वाणी सुभाषित होती है, दुर्भाषत नहीं,विज्ञों केलियेनिर्दोष। कौन-सी बातें? समय देखकर बोली गई वाणी होती है, सत्य वाणी होती है, कोमल वाणी होती है,हितकर-वाणी होती है, तथा मैत्री-चित्त से बोली गई वाणी होती है।भिक्षुओ,जिस वाणी में ये पांच बातें होती हैं, वह वाणी सुभाषित होती है, दुर्भाषित नहीं,विज्ञों केलियेनिर्दोष।

९. कुलसुत्तं

१९९.भिक्षुओ,जिस समय शीलवान प्रव्रजितकिसी भी गृहस्थ के यहां जाते हैं, तो गृहस्थ पांच तरह से बहुत पुण्यार्जन करते हैं। कौन-सी पांच तरह से?भिक्षुओजिस समय शीलवान प्रव्रजितों के गृहस्थों के यहां जाने पर, गृहस्थ-जन उन्हें देखकर मन में श्रद्धा उत्पन्‍न करते हैं, उस समयभिक्षुओ! उस कुल के लोग स्वर्गगामी मार्ग पर आरूढ़ होते हैं।

भिक्षुओ,जिस समय शीलवान प्रव्रजितों के गृहस्यों के यहां जाने पर, गृहस्थजन स्वागत करते हैं, अभिवादन करते हैं तथा आसन देते हैं, उस समयभिक्षुओ, उस कल के लोग ऊँचे कुल में जन्म लेने वाली प्रतिपदा का अनुगमन करते हैं।

भिक्षुओ,जिस समय शीलवान प्रव्रजितों के गृहस्थों के यहां जाने पर गृहस्थ-जन मात्सर्य-मल को त्याग देते हैं, उस समयभिक्षुओ, उस कुल के लोग महेशाक्य प्रतिपदा पर आरुढ़ हो जाते हैं।

भिक्षुओ,जिस समय शीलवान प्रव्रजितों के गृहस्थों के रङां जाने पर लोग यथा-शक्ति यथा-बल दान देते हैं, उस समयभिक्षुओ, उस कुल के लोग महा-भोग प्राप्त कराने वाली प्रतिपदा का अनुकरण हैं।

भिक्षुओ,जिस सम्य शीलवान प्रव्रजितों के गृहस्थों के यहां जाने पर मनुष्र प्रश्न पूछते हैं, सवाल करते हैं, धर्म सुनते हैं, उन समयभिक्षुओ, उस कुल के लोग प्रज्ञा प्राप्त कराने वाली प्रतिपदा का अनुगमन करते हैं।भिक्षुओ,जिस समय शीलवान प्रव्रजितकिसी भी गृहस्थ के यहां जाते हैं, तो गृहस्थ पांच तरह से बहुत पुण्यार्जन करते हैं।

१०. निस्सारणीयसुत्तं

२००.भिक्षुओ, ये पांचविमोक्ष-धातु हैं। कौन-सी पांच?भिक्षुओ, एकभिक्षु काम-भोगों काविचार करता है, उसका मन काम-भोगों में नहीं उलझता है, काम-भोगों में प्रसन्‍न नहीं होता है, काम-भोगों परस्थिर नहीं होता है तथा काम-भोघों पर नहीं छूटता है। किंतु जब वहनिष्क्रमण काविचार करता है, तो उसका मननिष्क्रमण में उलझता है,निष्क्रमण में प्रसन्‍न होता है,निष्क्रमण परस्थिर होता है तथानिष्क्रमण पर छूटता है। उसभिक्षु का वहचित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्‍ठित होता है, सुविमुक्त होता है, काम-भोगों से समयक रूप सेविमुक्त होता है। काम-भोगों के कारण जो आस्रव, जोविघात, जो परिदाह उत्पन्‍न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदना का अनुभव नहीं करता।भिक्षुओ, इसे ही काम-भोगों सेविमुक्ति कहते हैं।

फिरभिक्षुओ, एकभिक्षु क्रोध [= व्यापाद] काविचार करता है, उसका मन व्यापाद में नहीं उलझता है, व्यापाद में प्रसन्‍न नहीं होता है, व्यापाद परस्थिर नहीं होता है तथा व्यापाद पर नहीं छूटता है। किंतु जब वह क्रोध [= अव्यापद] काविचार करता है, तो उसका मन अव्यापाद में उलझता है, अव्यापाद में प्रसन्‍न होता है, अव्यापाद परस्थिर होता है तथा अव्यापाद पर छूटता है। उसभिक्षु का वहचित्त सुगति प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्‍ठित होता है, सुविमुक्त होता है, व्यापाद से सम्यक रूप सेविमुक्त होता है। व्यापाद के कारण जो आश्रव, जोविघात, जो परिदाह उत्पन्‍न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदना का अनुभव नहीं करता।भिक्षुओ, इसे ही व्यापाद से मुक्ति कहते हैं।

फिरभिक्षुओ, एकभिक्षुविहिंसा काविचार करता है, उसका मनविहिंसा में नहीं उलझता है,विहिंसा में प्रसन्‍न नहीं होता है,विहिंसा परस्थिर नहीं होता है तथाविहिंसा पर नहीं छूटता है। किंतु जब वह अविहिंसा [= मैत्री] काविचार करता है, तो उसका मन अविहिंसा में उलझता है, अविहिंसा में प्रसन्‍न होता है, अविहिंसा परस्थिर होता है तथा अविहिंसा पर छूटता है। उसभिक्षु का वहचित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सप्रतिष्‍ठित होता है, सुविमुक्त होता है,विहिंसा से सम्यक रूप सेविमुक्त होता है।विहिंसा के कारण जो आस्रव, जोविघात, जो परिदाह उत्पन्‍न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदना का अनुभव नहीं करता।भिक्षुओ, इसे हीविहिंसा से मुक्ति कहते हैं।

फिरभिक्षुओ, एकभिक्षु रूप काविचार करता है, उसका मन रूप में नहीं उलझता है, रूप में प्रसन्‍न नहीं होता है, रूप परस्थिर नहीं होता है तथा रूप पर नहीं छूटता है। किंतु जब वह अरूप काविचार करता है, तो उसका मन अरूप में उलझता है, अरूप में प्रसन्‍न होता है, अरूप परस्थिर होता है, तथा अरूप पर छूटता है। उसभिक्षु का वहचित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्‍ठित होता है, सुविमुक्त होता है, रूप से सम्यक रूप सेविमुक्त होता है, रूप के कारण जो आस्रव, जोविघात, जो परिदाह उत्पन्‍न होते हैं, वह उन से मुक्त होता है, वह उस वेदना का अनुभव नहीं करता।भिक्षुओ, इसे ही रूप सेविमुक्ति कहते हैं।

फिरभिक्षुओ, एकभिक्षु सत्काय [= दृष्टि] काविचार करता है, उसका मन सत्काय में नहीं उलझता है, सत्काय में प्रसन्‍न नहीं होता है, सत्काय परस्थिर नहीं होता है, तथा सत्काय पर नहीं छूटता है। किंतु जब वह असत्काय काविचार करता है, तो उसका मन असत्काय में उलझता है, असत्काय में प्रसन्‍न होता है, असत्काय परस्थिर होता है, तथा असत्काय पर छूटता है। उसभिक्षु का वहचित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्‍ठित होता है, सुविमुक्त होता है, सत्काय से सम्यक रूप सेविमुक्त होता है। सत्काय के कारण जो सास्रव, जोविघात, जो परदाह उत्पन्‍न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदना का अनुभव नहीं करता।भिक्षुओ, इसे ही सत्काय [= दृष्टि] सेविमुक्ति कहते हैं। जो ऐसाविमुक्त-पुरुष होता है, काम-भोग संबंधी मजा भी उसका अनुशय [चित्त का बंधन] नहीं बनता, व्यापाद संबंधी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता,विहिंसा संबंधी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता, रूप संबंधी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता, सत्काय [= दृष्टि] संबंधी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता। जो कामभोग संबंधी अनुशय से मुक्त होता है, जो व्यापाद संबंधी अनुशय से मुक्त होता है, जोविहिंसा संबंधी अनुशय से मुक्त होता है, जो रूप संबंधी अनुशय से मुक्त होता है तथा जो सत्काय [= दृष्टि] संबंधी अनुशय से मुक्त होता है,भिक्षुओ, उसी के बारे में कहा जा सकता हैकि वह अनुशय-रहित है,कि उसने तृष्णा के बंधन को काटदिया है, संयोजनों को हटादिया है,कि उसने अहंकार का सम्यक प्रकार से शमन कर दुःख का अंत कर डाला है।भिक्षुओ, ये पांचविमोक्ष-धातु हैं।